दैनिक राष्ट्रीय समाचार पत्र

D Edition

Reg.No.RJ26D00120077

भारत टाइम्स

www.bharattimenews.com

सत्यमेव परं श्रुतम्

Bharattimesnews01@gmail.com

पेज 4

विचार

लेखक के रूप में आप यात्री बनें, तो यह तैयारी मन में कर लेते हैं कि यात्रा कठिन होगी, मंजिल अनिश्चित और अनजानी है, सुख केवल चलने और चलते रहने भर का है।

शरद जोशी ....

वर्ष- 2 | अंक-299 | दिल्ली, रविवार 8 दिसम्बर 2024 | पेज-8 | ई-पेपर नई दिल्ली से प्रसारित

जज्बे को सलाम, गोली लगने के बाद भी पांच किलोमीटर तक दौड़ाई जीप

सभी को अस्पताल पहुंचा, खुद का इलाज कराया

पटना। इन दोनों बिहार के भोजपुर जिले में एक जीप चालक के बहादुरी की चर्चा है। सोशल मीडिया से लेकर लोगों के जुबान पर जीप चालक के जज्बे की बात हो रही है। दरअसल मामला कुछ ऐसा है। यहां एक जीप चालक को हथियार बंद बदमाशों द्वारा देर रात गोली मार दी गई है। लेकिन जीप चालक ने गोली लगने के बाद भी करीब 5 किलोमीटर गाड़ी चलाकर खुद अस्पताल पहुंचकर अपना इलाज कराया। जख्मी ड्राइवर की पहचान हेमतपुर गांव के रहने वाले संतोष सिंह के रूप में हुई है। इधर गोलीबारी की घटना में जख्मी हुए चालक सिंह ने बताया, वह शुकुलपुरा गांव निवासी मिठू साव की

बेटी के तिलक में अपने कमांडर जीप पर बैठाकर करीब 15 लोगों को लेकर रामदतही गांव हुए थे। तिलक समारोह का कार्यक्रम समाप्त होने के बाद सभी लोगों को वापस अपने जीप में बैठाकर लौट रहे थे। तभी झौआ गांव के पास रात को बाइक सवार हथियारबंद अपराधियों ने मुझे गोली मार दी। उन्होंने बताया, इसके बावजूद करीब 5 किलोमीटर तक गाड़ी चलाकर बाइक सवार बदमाशों से बचाकर सभी लोगों को सुरक्षित अस्पताल पहुंचाया। जख्मी ड्राइवर ने बताया कि 9 की संख्या में तीन बाइक पर सवार बदमाश थे और सामने से वह लोग आ रहे थे। आते ही गाड़ी रुकवाकर गोली मार दिए। क्यों मारे यह हमें जानकारी नहीं है हम किसी को जानते भी नहीं है। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस के आला अधिकारियों के अलावा एफएसएल की टीम सहित भारी संख्या में पुलिस बल मौके पर पहुंची और पूरे मामले की छानबीन में जुट गई।

बाबरी मस्जिद विध्वंस पर गर्व.उद्धव के करीबी की पोस्ट, एमवीए से बाहर हुई सपा

मुंबई। समाजवादी पार्टी (सपा) ने महा विकास अघाड़ी (एमवीए) से अलग होने की घोषणा कर दी है। यह निर्णय शिवसेना (यूबीटी) के नेता और उद्धव ठाकरे के करीबी मिलिंद नार्वेकर द्वारा बाबरी मस्जिद विध्वंस का समर्थन कर पोस्ट के बाद आया है। दरअसल नार्वेकर ने सोशल मीडिया पर बाबरी मस्जिद विध्वंस की एक तस्वीर साझा की। पोस्ट में शिवसेना संस्थापक बाल ठाकरे का कथन भी शामिल था, जिसमें उन्होंने कहा था, मुझे उन लोगों पर गर्व है जिन्होंने ऐसा किया। इस पोस्ट के साथ उद्धव और आदित्य ठाकरे की तस्वीरें भी थीं। इसके अलावा, शिवसेना (यूबीटी) ने एक समाचार पत्र में विज्ञापन दिया था, जिसमें बाबरी विध्वंस की तारीफ की गई थी। इसके बाद महाराष्ट्र सपा अध्यक्ष अबू आजमी ने कड़ा विरोध जताकर कहा कि अगर एमवीए में ऐसी भाषा इस्तेमाल होती है, तब भाजपा और उनमें क्या फर्क है? हमें इसतरह के गठबंधन में क्यों रहना चाहिए? उन्होंने कहा कि वे इस मुद्दे पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव से चर्चा कर रहे हैं और एमवीए से अलग होने का फैसला पक्का है। वहीं एमवीए में शिवसेना (यूबीटी), कांग्रेस, और एनसीपी का शरद पवार गुट शामिल है। सपा का यह कदम एमवीए के लिए बड़ा झटका साबित हो सकता है, खासकर उस समय में जब महाराष्ट्र की राजनीति पहले से ही कई आंतरिक विवादों और भाजपा के दबदबे के कारण मुश्किल दौर से गुजर रही है।

इंडिया को लीड करने को तैयार ममता, तिलमिला उठी कांग्रेस..लेकिन सपा ने दिया साथ

राजद ने कहा, विपक्षी गठबंधन के असली आर्किटेक्ट लालू

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के विपक्षी गठबंधन इंडिया की कमान संभालने के बयान ने विपक्षी दलों की बैचेनी बढ़ दी है। खासकर ममता के बयान के बाद कांग्रेस कुछ ज्यादा ही बैचेन दिख रही है। दरअसल ममता ने हाल ही में हुए चुनावों में गठबंधन के प्रदर्शन पर निराशा जताकर कहा कि वे इस गठबंधन की कमान संभालने के लिए तैयार हैं। वहीं ममता के बयान पर कांग्रेस और लेफ्ट नेताओं ने अपनी प्रतिक्रिया दी। कांग्रेस सांसद वर्षा गायकवाड़ ने कहा कि ममता को ऐसा लगता है, लेकिन कांग्रेस इस पर विचार करेगी और जो फैसला होगा, वह पार्टी के अंदर चर्चा के बाद लिया जाएगा। लेफ्ट नेता डी राजा ने कांग्रेस पर तंज कंसते हुए कहा कि कांग्रेस को आत्मचिंतन करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने हरियाणा और महाराष्ट्र में गठबंधन सहयोगियों को समायोजित करने में विफलता दिखाई, जिससे परिणाम उम्मीद के मुताबिक नहीं आए। वहीं इंडिया गठबंधन की प्रमुख पार्टी

समाजवादी पार्टी (सपा) ने ममता का समर्थन किया है। सपा प्रवक्ता उदयवीर सिंह ने कहा कि ममता के बयान पर विचार होगा और उनका सहयोग लिया जाएगा, इससे इंडिया गठबंधन मजबूत होगा। उन्होंने ममता के बंगाल में भाजपा को रोकने के प्रयासों को सरहाकर कहा कि उनका समर्थन पार्टी को हमेशा मिलता रहेगा।

वहीं मौके देखकर राजद (आरजेडी) ने ममता के बयान पर पलटवार कर कहा कि विपक्षी गठबंधन के असली आर्किटेक्ट लालू प्रसाद यादव हैं। आरजेडी प्रवक्ता मृत्युंजय तिवारी ने कहा कि बिहार में गठबंधन की मजबूती और आगामी चुनावों में भाजपा के खिलाफ रणनीति बनाने के लिए सभी एकजुट हैं।

उन्होंने कहा कि ममता पश्चिम बंगाल में भाजपा के खिलाफ मजबूती से लड़ाई लड़ रही हैं। वहीं इंडिया गठबंधन में लीडर को लेकर मची सियासी रार पर जेडीयू प्रवक्ता नीरज कुमार ने ममता के बयान को इंडिया गठबंधन के अंदरूनी मामले के रूप में देखा, जबकि भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने गठबंधन की आंतरिक राजनीति और महत्वाकांक्षाओं का परिणाम बताया। उन्होंने कहा कि गठबंधन के नेता खुद को मुखिया बनाने के इच्छुक हैं, लेकिन असल में वे सत्ता में आने की स्थिति में नहीं हैं।

जम्मू-कश्मीर के स्कूलों में सर्दियों की छुट्टियों का हुआ ऐलान

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में शीतकालीन छुट्टियों का ऐलान किया गया है। स्कूल शिक्षा विभाग ने कश्मीर संभाग के शीतकालीन जोनों में क्रमशः 10 और 16 दिसंबर से चरणबद्ध तरीके से शीतकालीन अवकाश की घोषणा की है। स्कूल शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव सुरेश कुमार गुप्ता के अनुसार आदेश में कहा गया है कि 5वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए छुट्टियां 10 दिसंबर से 28 फरवरी तक और 6वीं कक्षा से 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए छुट्टियां 16 दिसंबर से 28 फरवरी तक रहेंगी।

मोदी सरकार ने तीन कैंसर रोधी दवाओं की कीमतें घटाईं, रोगियों को राहत...

नई दिल्ली। भारत में कैंसर के मामले के बढ़ने के साथ-साथ दवाइयों की मांग भी काफी बढ़ी है। कैंसर मरीजों को कम दामों पर दवाएं मिलती रहें इसके लिए मोदी सरकार समय समय पर कुछ दवाओं की कीमतों को कम कर रही है। इसी कड़ी में तीन कैंसर रोधी दवाओं - ट्रैस्टुजुमैब डेरक्सटेकन, ओसिमर्टिनिब और डुरवालुमैब दवाओं पर अधिकतम खुदरा मूल्य (एमआरपी) कम करना का फैसला हुआ है। केंद्रीय रसायन और उर्वरक राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल ने बताया कि केंद्र सरकार ने इन तीन दवाओं/फॉमूर्लेशन पर मूल सीमा शुल्क (बीसीडी) को शून्य करने के अलावा इन कैंसर रोधी दवाओं पर जीएसटी दरों को 12 से घटाकर 5 प्रतिशत करने की अधिसूचना जारी की थी। निमार्ताओं ने इन दवाओं पर एमआरपी कम कर दी है और राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण (एनपीपीए) के पास सूचना दे दी है। एनपीपीए ने कंपनियों को जीएसटी दरों में कमी और सीमा शुल्क से छूट के कारण इन दवाओं पर एमआरपी कम करने का निर्देश दिया था, ताकि उपभोक्ताओं को इसका लाभ मिल सके। उदाहरण के लिए, एस्ट्राजेनेका फार्मा इंडिया लिमिटेड ने कई फॉमूर्लेशन पर प्रति शीशी एमआरपी कम कर दी है।

सार-समाचार

दिल्ली हवाई अड्डे पर 73 लाख रुपये मूल्य का सोना बरामद, आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आईजीआई) हवाई अड्डे पर शुक्रवार को सीमा शुल्क विभाग ने 73 लाख रुपये का विदेशी सोना बरामद किया और एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। आरोपी इंदौर से दिल्ली आ रहा था। सीमा शुल्क विभाग के मुताबिक, आरोपी के सामान की जांच के दौरान संदिग्ध वस्तुएं मिली, जिसमें पीली धातु के 13 टुकड़े थे। यह सोना विदेशी मूल का प्रतीत हो रहा था और इसका कुल वजन 999 ग्राम था। जब्त किए गए सोने का मूल्य करीब 72.72 लाख रुपये आंका गया है। विभाग ने आरोपी को गिरफ्तार कर मामले की जांच जारी है।

सागर के दिहाड़ी मजदूर की खुली किस्मत...दो करोड़ 22 लाख 72 हजार में बिका हीरा

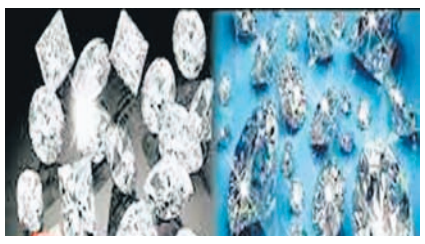

भोपाल। हीरों की नगरी पन्ना में नीलामी खत्म हो गई। इस बार 5 करोड़ से अधिक की कीमत के हीरे खरीदे गए, लेकिन इसमें सबसे ज्यादा चर्चा 32 कैरेट 80 सेंट वाले नायाब हीरे की हो रही है। क्योंकि, इस हीरे ने एक मजदूर को करोड़पति बनाया है। दिहाड़ी मजदूर को इसकी कीमत दो करोड़ 22 लाख 72 हजार से अधिक मिली है। हीरे ने स्वामी दीन पाल की 3 माह में किस्मत पलट दी। हीरा नीलामी में देश भर से आए पारखियों द्वारा इसी नायाब हीरे पर को सबसे ज्यादा दाम दिए गए। हीरा 32.80 कैरेट वजन का 6 लाख 76 हजार रुपये के भाव से कुल 2 करोड़ 21 लाख 72 हजार 800 रुपये में विक्रय किया गया। इस हीरे को पन्ना के ही सतेंद्र जड़िया ने खरीदा है। सितंबर माह में स्वामी दीन को यह हीरा उथली खदान से प्राप्त हुआ था। तब हीरा पारखी द्वारा इसकी कीमत डेढ़ करोड़ आंकी गई थी, लेकिन जब यह नीलामी में आया, तब हीरे को देखकर हर एक व्यापारी अपना बनाना चाह रहा था, यही वजह रही कि इसकी कीमत 2 करोड़ 20 लाख से भी ऊपर पहुंच गई थी। सरकोहा निवासी दीन पाल मात्र 200, 300 रुपये की दिहाड़ी पर मजदूरी करते थे। उनके पास थोड़ी सी जमीन थी, लेकिन पानी की कमी के चलते वह जमीन पर ठीक से खेती भी नहीं कर पाते थे। इसकारण मई 2024 में उन्होंने खदान लगाने के लिए पट्टा बनवाया था।

नाराज पत्नी से मिलने, पति ने किया पड़ोसी के बच्चे का अपहरण

गुरुग्राम। हरियाणा से अजीब और चौंकाने वाली घटना सामने आई है, जहां एक पति ने अपनी पत्नी से मिलने के लिए पड़ोस के 10 साल के बच्चे का अपहरण किया। यह घटना नाथूपुर इलाके की है, जहां एक महिला अपने पति से नाराज होकर अलग रह रही थी और पति से मिलने से मना कर दिया। इसके बाद, पति ने पत्नी से मिलवाने के लिए पड़ोसी के बच्चे का किडनैप कर उसके पिता को कॉल करके कहा कि मुझे मेरी पत्नी से मिलवाओ, तभी बच्चे को छोड़ूंगा। पुलिस ने बताया आरोपी की पहचान 25 वर्षीय वरुण के रूप में हुई है। वरुण ने पहले पार्क में खेल रहे बच्चे को उठाकर अपने कब्जे में ले लिया। इसके बाद, बच्चे के पिता को फोन करके पत्नी से मिलवाने की अपनी शर्त रखी। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए वरुण को गिरफ्तार कर बच्चे को सुरक्षित बरामद किया। पुलिस ने बताया कि आरोपी वरुण पहले भी 2021 में तीन साल के बच्चे के अपहरण के आरोप में गिरफ्तार हो चुका था। वह पिछले साल अगस्त में जमानत पर रिहा हुआ था। आरोपी वरुण ने बताया कि उसकी पत्नी नाथूपुर इलाके में काम करती है।

औद्योगिक विकास के प्रयासों में नर्मदापुरम को मिली अपार सफलता- मुख्यमंत्री डॉ. यादव

नर्मदापुरम के विकास का केंद्र बनेगा औद्योगिक क्षेत्र मोहासा-बाबई

नर्मदापुरम का कर्मशील मानव संसाधन औद्योगिक विकास में बनेगा सहायक

- मुख्यमंत्री ने मोहासा में विद्युत एवं नवकरणीय ऊर्जा उपकरण विनिर्माण पार्क सहित नवीन इकाइयों का किया भूमि-पूजन
- कॉन्क्लेव में 18 हजार करोड़ निवेश से 24 हजार युवाओं को मिलेगा रोजगार

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि औद्योगिक क्षेत्र मोहासा-बाबई समूचे नर्मदापुरम के विकास का केंद्र बनेगा। सतपुड़ा का यह क्षेत्र आज नया इतिहास रचने जा रहा है। औद्योगिक विकास के लिए मध्यप्रदेश सरकार द्वारा किए गए प्रयासों से नर्मदापुरम आरआईसी में अपार सफलता प्राप्त हुई है। आरआईसी से मोहासा-बाबई सौर ऊर्जा पार्क की भूमि 227 एकड़ से बढ़कर 884 एकड़ हो गई। आरआईसी में 20 औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए भूमि आवंटन-पत्र भी वितरित किये गये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को औद्योगिक क्षेत्र मोहासा-बाबई में आयोजित विद्युत एवं नवकरणीय ऊर्जा उपकरण विनिर्माण क्षेत्र में इकाइयों के भूमि-पूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे। भूमि-पूजन समारोह में लोक निर्माण विभाग एवं नर्मदापुरम जिले के प्रभारी मंत्री श्री राकेश सिंह, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, सांसद श्री दर्शन सिंह चौधरी, राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया, विधायक डॉ सीतासरन शर्मा, विधायक सोहागपुर श्री विजयपाल सिंह, विधायक सिवनीमालवा श्री प्रेम शंकर वर्मा तथा प्रमुख सचिव मध्यप्रदेश औद्योगिक निवेश एवं प्रोत्साहन विभाग श्री राघवेन्द्र सिंह सहित अन्य जन-प्रतिनिधि, विभिन्न औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में जनसमूह उपस्थित रहा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्र मोहासा-बाबई नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में नया इतिहास रचने जा रहा है। इस औद्योगिक क्षेत्र में स्थापित होने वाली औद्योगिक इकाइयों द्वारा लगभग 2 हजार करोड़ रुपए से अधिक का निवेश किया जा रहा है। इससे सोहागपुर, इटारसी, सिवनीमालवा, पिपरिया, पचमढ़ी के स्थानीय युवाओं को रोजगार प्राप्त होगा और रोजगार के लिए होने वाला पलायन इन क्षेत्रों से रुकेगा। आरआईसी में किये जा रहे निवेश के कारण महज 2 से 3 वर्षों में ही संपूर्ण नर्मदापुरम क्षेत्र का आर्थिक परिदृश्य बदलेगा। नर्मदापुरम की कर्मशील जनता औद्योगिक विकास में सहायक बनेगी। ~

मोहासा-बाबई को आदर्श औदयोगिक पार्क बनाएंगे

मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने उद्योग भूमि आवंटन के लिए क्षेत्र की जनता को बधाई देते हुए कहा कि क्षेत्र में उद्योग स्थापित होने से युवाओं को रोजगार मिलेगा। उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. यादव का भी आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने इतने कम समय में 884 एकड़ औद्योगिक पार्क मोहासा-बाबई स्वीकृत कर क्षेत्र को नई पहचान देने के साथ औद्योगिक विकास को भी गति दी है। उन्होंने कहा कि यहां मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक पार्क की भी प्लानिंग की जायेगी। इसे एक आदर्श इंडस्ट्रियल पार्क बनाया जाएगा, इस दिशा में हमारी पूरी टीम उद्योगपतियों के साथ मिलकर काम करेगी। मुख्य सचिव श्री जैन ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के प्रयासों से निवेशक निरंतर मध्यप्रदेश की ओर आकर्षित हो रहे हैं। दुनिया की सबसे बड़ी एनर्जी कंपनी ब्लू एनर्जी का प्लांट मोहासा-बाबई स्थापित होने जा रहा है। सरकार दुनिया के इन्वेस्टर्स के साथ-साथ स्थानीय उद्यमियों को भी आगे बढ़ने के अवसर प्रदान कर रही है। सरकार की उद्योग फ्रेंडली नीतियों के कारण दूसरे राज्यों में निवेश करने जा रहे उद्योगपति अब मध्यप्रदेश के मोहासा-बाबई में अपनी इकाई स्थापित कर रहे हैं। मुख्य सचिव ने बताया कि औद्योगिक पार्क मोहासा-बाबई में सोलर-सेल/सोलर मॉडल के साथ ग्रीन हाइड्रोजन, पल्स एनर्जी, लिथियम आयन बैटरी इत्यादि नवकरणीय ऊर्जा उपकरणों का पूरा सिस्टम स्थापित होगा।

मोहासा-बाबई में तेजी से कार्य करना प्रारंभ करेंगी औद्योगिक इकाइयां

लैंड्स मिल के सीईओ श्री संदीप गर्ग ने इंडस्ट्री की ओर से मुख्यमंत्री डॉ. यादव का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के विकास के लिए कोई कमी नहीं रखी है। उन्होंने जिस गति से उद्योगपतियों को भूमि आवंटन की है उसी गति से उद्योगपति भी औद्योगिक क्षेत्र मोहासा-बाबई में इंडस्ट्री को स्थापित करने में अपना योगदान देंगे। उन्होंने कहा कि वर्ष-2025 में मध्यप्रदेश को औद्योगिक शिखर पर ले जाने का कार्य करेंगे। क्षेत्र में उद्योग स्थापित होने से औद्योगिक विकास को भी गति मिलेगी और बड़ी संख्या में रोजगार सृजन भी होगा। साथ ही प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार को भी बढ़ावा मिलेगा। प्रमुख सचिव उद्योग श्री राघवेन्द्र सिंह ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्र मोहासा-बाबई के विकास के लिए पिछले एक वर्ष में की गई मेहनत अब रंग लाई है। हम मध्यप्रदेश को नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में राष्ट्रीय और वैश्विक मानचित्र में स्थापित करने की दिशा में बढ रहे है। मुख्यमंत्री द्वारा आज 663 एकड़ भूमि के लैंड अलॉटमेंट लेटर विभिन्न औद्योगिक इकाई को प्रदान किये गये हैं। इससे औद्योगिक क्षेत्र मोहासा-बाबई में 18 हजार करोड़ रुपए का निवेश होगा, जिससे लगभग 24 हजार रोजगारों का सृजन हो सकेगा।

इन इकाइयों को दिया गया भूमि आवंटन-पत्र

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंच से ग्रीन एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड को 60 एकड़, लैंडस मील ग्रीन इंडस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड को 70 एकड़, लैंडस मील ग्रीन इंडस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड को 18 एकड़, लैंडस मील रिन्यूएबल्स प्राइवेट लिमिटेड को 30 एकड़, इंसोलेशन ग्रीन एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड को 45 एकड़, प्रीमियम एनर्जी ग्लोबल एंड प्राइवेट लिमिटेड को 50 एकड़, सात्विक सोलर इंडस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड को 50 एकड़, सनकॉइन एकड़ फोटो वॉल्टैडक्स प्राइवेट लिमिटेड को 30 एकड़, रेज ग्रीन एनर्जी मैन्युफैक्चरिंग प्राइवेट लिमिटेड को 38 एकड़, एलपैक्सन सोलर लिमिटेड को 30 एकड़, वीएसएनएल ग्रीन पॉवर प्राइवेट लिमिटेड, पैरामाउंट कम्युनिकेशन लिमिटेड, टैक्सर एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड, ब्लू नेवा प्राइवेट लिमिटेड, जैट वेव साल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड, फ्रा डिगम अल्फार कैपेसिटर्स प्राइवेट लिमिटेड एवं ग्लेडन हेल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड के प्रतिनिधियों को भूमि आवंटन-पत्र का वितरण किया

प्रदेश को टीबी मुक्त बनाने के लिए सभी की भागीदारी जरूरी-सीएम डॉ. यादव

100 दिवसीय नि-क्षय अभियान का हुआ शुभारंभ

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को नर्मदापुरम से ₹100 दिवसीय नि-क्षय अभियान₹ का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश को टी.बी. मुक्त बनाने की दिशा में यह ₹100 दिवसीय निक्षय अभियान₹ एक सकारात्मक पहल है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए इसे जन-आंदोलन बनाना जरूरी है। समाज के सभी वर्गों के सहयोग से इस अभियान को सफल बनाना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष-2018 में देश को वर्ष-2025 तक टी.बी. अर्थात क्षय रोग से मुक्त कराने का संकल्प लिया था। यह अभियान उसमें एक सार्थक भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि नागरिकों की जिंदगी बचाने के लिए आज शुरू हुआ यह अभियान देश के 347 जिलों में प्रारंभ हो रहा है, जिसमें मध्यप्रदेश के 23 जिले भी शामिल हैं। इस अभियान का उद्देश्य टी.बी. प्रकरणों की पहचान, मृत्यु दर में कमी और नए टी.बी. प्रकरणों में कमी लाना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में नि-क्षय मित्र पहल के तहत हम टी.बी. मरीजों को पोषण सहायता प्रदान कर हर संभव मदद पहुंचा रहे हैं। इसमें हम टी.बी. के मरीजों को प्रतिमाह पूरक खाद्य बास्केट प्रदान करते हैं, जिससे उनके शरीर को बीमारी से लड़ने के लिए जरूरी ताकत मिल सके। उन्होंने कहा कि अब टी.बी लाइलाज बीमारी नहीं है, टी.बी. का इलाज संभव है, टी.बी. से डरने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के अनुसार सभी देशों ने वर्ष-2030 तक टी.बी. उन्मूलन का लक्ष्य तय किया है, लेकिन केन्द्र सरकार ने इससे पहले वर्ष-2025 तक टीबी उन्मूलन का लक्ष्य रखा है। इसी संकल्प को पूरा करने के लिए प्रत्येक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि वर्ष-2015 से 2023 तक भारत में टी.बी. के मामलों में 17.7 प्रतिशत की गिरावट आई है। यह दर वैश्विक गिरावट 8.3 प्रतिशत से दोगुना से भी अधिक है। उन्होंने यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है कि वर्ष 2015 में भारत में प्रति 1 लाख जनसंख्या पर टी.बी. के प्रकरण 237 थे, जो वर्ष-2023 में घटकर 195 रह गए हैं। मध्यप्रदेश ने इस उपलब्धि में अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2015 में टी.बी. से होने वाली मृत्यु दर प्रति 1 लाख जनसंख्या पर 28 थी, जो वर्ष 2023 में घटकर 22 हो गई है। वर्ष 2025 तक इसे घटाकर मात्र 3 तक लाने का लक्ष्य हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं के मामले में लगातार विकास हो रहा है। प्रदेश में शासकीय मेडिकल कॉलेज के साथ पीपीपी मोड पर भी मेडिकल कॉलेज प्रारंभ किए गए हैं। उन्होंने कहा कि हमारा संकल्प है कि मध्यप्रदेश के प्रत्येक संसदीय क्षेत्र में कम से कम एक मेडिकल कॉलेज की सुविधा नागरिकों को उपलब्ध हो। इस दिशा में प्रदेश लगातार आगे बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नागरिकों से की अपील- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के सभी नागरिकों, जन-प्रतिनिधियों, और सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों से अपील की कि वे इस 100 दिवसीय नि-क्षय अभियान का हिस्सा बनकर टी.बी. मरीजों की मदद करें और उन्हें बताए कि अब टी.बी. लाइलाज बीमारी नहीं है।

बाड़मेर भविष्य के विद्युत भार अनुसार सब स्टेशनों के प्रस्ताव बनाए

♦भारत टाइम्स♦

प्रदीप कुमार गर्ग बाड़मेर डिस्कॉम अधिकारी बेनिवाल। बाड़मेर सांसद ने ली जिला विद्युत समिति की बैठक, केन्द्र पोषित योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की बाड़मेर, 07 दिसंबर। जिला विद्युत समिति की प्रथम बैठक शनिवार को कलेक्ट्रेट कांफ्रेंस हॉल में बाड़मेर-जैसलमेर सांसद उम्मेदाराम बेनिवाल की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में सांसद उम्मेदाराम बेनिवाल ने केन्द्र पोषित आरडीएसएस योजना के अन्तर्गत किए जा रहे विभिन्न कार्यो, पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना व कुसुम ए एवं कुसुम सी योजना के अन्तर्गत लगे रहे सौलर प्लांट के कार्यो की प्रगति की समीक्षा की। इस दौरान सांसद बेनिवाल ने किसानों के बकाया घरेलू व कृषि कनेक्शनों को जारी करने के अधिकारियों को निर्देश दिए, साथ ही आगामी 10-15 में औसतन बढ़ने वाले कृषि

विद्युत भार के मद्देनजर 33 केवी, 132 केवी एवं 220 केवी ग्रिड सब स्टेशनों के प्रस्ताव बनाने के निर्देश दिए। बैठक में जिला कलेक्टर टीना डाबी ने डिस्कॉम अधिकारियों को लंबित घरेलू आवेदनो को विभागीय नियमानुसार कनेक्शन जारी करने के निर्देश दिए। साथ ही इस कार्य की प्रभावी मॉनिटरिंग करते हुए आगामी बैठक से पूर्व प्रगति से अवगत कराने के निर्देश दिए। बैठक में अधीक्षण अभियंता बाड़मेर अशोक कुमार मीना ने आरडीएसएस के तहत चल रहे 33/11 केवी सब स्टेशन जुनेजो की बस्ती, सिंधासवा हरियान, खड़ीन, हीराणियों का तला, भीमथल के कार्यो की प्रगति से अवगत कराया जिसमें जुनेजो की बस्ती सब स्टेशन रविवार तक चार्ज करने के बारे में अवगत कराया। इसके अतिरिक्त फीडर बाईफ्रिकेशन के चल रहे 33 केवी, 11 केवी कार्यो की प्रगति से भी अवगत कराया। अधीक्षण अभियंता ने आरडीएसएस के तहत लंबित घरेलू कनेक्शन विभागीय नियमानुसार जारी करने हेतु आश्वस्त किया। साथ ही पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना को विस्तृत रूप से समझाते हुए प्रगति एवं मिलने वाली सब्सिडी से अवगत कराया। साथ ही उपभोक्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में जानकारी दी। कुसुम सी एवं कुसुम ए के तहत लग चुके सौलर प्लांट एवं भविष्य में लगने वाले प्लांट के बारे में भी जानकारी दी। जिला कलेक्टर टीना डाबी ने योजना के प्रोत्साहन के लिए बीडीओ व एसडीएम स्तर पर लक्ष्य निर्धारित करने के निर्देश दिए। बैठक में गिरल के मुख्य अभियंता सहित डिस्कॉम के अधिशाषी अभियंता व सहायक अभियंता एवं कंपनी के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

संकुल स्तरीय शिशु वाटिका संगम का आयोजन

♦भारत टाइम्स♦

देवगढ़ विद्याधर वैष्णव। विद्या भारती संस्थान राजसमंद द्वारा संचालित विद्या निकेतन माध्यमिक विद्यालय मे शनिवार को देवगढ़ संकुल की शिशु वाटिका के भैया बहिन आचार्य दीदी का संकुल स्तरीय संगम कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमे विद्या भारती संस्थान के देवगढ़ विद्यालय के 105 , भीम विद्यालय के 65 तथा बरार विद्यालय के 71 के शिशु वाटिका के कुल 241 भैया बहिन तथा 11 दीदी एवम तीनो विद्यालय के प्रधानाचार्य तथा शिशु वाटिका जिला प्रभारी सरस्वती जोशी उपस्थित रहे।कार्यक्रम मे सभी भैया बहिन ने दिन भर विद्यालय मे उपस्थित रहकर शिशु वाटिका की गतिविधि की जानकारी प्राप्त की शिशु वाटिका जिला प्रभारी सरस्वती जोशी ने शिशु वाटिका की 12 शैक्षणिक गतिविधियों व 4 आयाम के बारे मे विस्तार से बताया बच्चों ने दिन भर गतिविधियों का आनंद लिया और एक दूसरे भैया बहिन से संपर्क कर खेल खेल मे स्मरण शक्ति के खेल, रंग मिलान, आकृति मिलान, एकाग्रता शक्ति बढ़ाने के खेल आदि शिक्षा की गतिविधि की जानकारी प्राप्त की! कार्यक्रम के अंत मे सभी भैया बहिन को विद्यालय द्वारा बिस्किट एवम

आचार्य दीदी को तुलसी पौधे वितरित किये गए।इस अवसर पर देवगढ़ संकुल प्रमुख व प्रधानाचार्य कल्याण सिंह बल्ला, भीम विद्यालय के प्रधानाचार्य छगन सिंह, बरार विद्यालय के प्रधानाचार्य मदन सिंह, जिला शिशु वाटिका प्रभारी सरस्वती जोशी, एवम शिशु वाटिका के राजकुमारी शर्मा, रेणु राठौड़, रेखा परिहार, राम कन्या सोनी, संतोष दीदी एवम विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

समाजसेवी राजस्थान इंडियन स्टार डॉक्टर महेश सोनी को जैन श्रावक रत्न व अंतरराष्ट्रीय कला एवं साहित्य सम्मान पत्र 2024 से किया सम्मानित

♦भारत टाइम्स♦

सोजत सिटी । जाने माने भामाशाह व समाजसेवी व सोजत मेहंदी नगरी के युवा रत्न व राजस्थान इंडियन स्टार डॉक्टर महेश सोनी सोजत सिटी को भामाशाह व समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर जैन श्रावक रत्न व अंतरराष्ट्रीय कला एवं साहित्य सम्मान समारोह के शुभ अवसर पर जैन श्रावक रत्न व अंतरराष्ट्रीय कला एवं साहित्य सम्मान पत्र 2024 से आपको समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर ऑनलाइन सम्मानित किया गया। एव जैन श्रावक रत्न व अंतरराष्ट्रीय कला एवं साहित्य सम्मान आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता है। एवं समाजसेवी व राजस्थान इंडियन स्टार डॉक्टर महेश सोनी ने आभार जताया।

फेसबुक पोस्ट पर आपत्तिजनक कमेंट करने वाले के खिलाफ मामला दर्ज

राज्यसभा सांसद नीरज डांगी के खिलाफ फेसबुक पर कमेंट

♦भारत टाइम्स♦

फिरोज खान सिरोही। फेसबुक पर आपत्तिजनक कमेंट करना पड़ा महंगा राजस्थान से राज्यसभा सांसद नीरज डांगी शीतकालीन सत्र के दौरान संसद में अपनी बात रख रहे थे। उसका वीडियो सोशल मीडिया पर कांग्रेस पार्टी के युवा पदाधिकारी मानाराम चौधरी ने फेसबुक पर 5 दिसंबर को शेयर किया था। उस वीडियो के पर जेतावाडा विद्युत विभाग में कार्यरत कार्मिक सतीश मीणा ने अब शब्द लिखें। मानाराम चौधरी ने स्किन सोर्ट लेकर अपने उच्च पदअधिकारीयों को बताया जैसे ही खबर सभी कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता व पदाधिकारीयों मिली सभी ने सतीश मीणा के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए कहा। मानाराम चौधरी सोरडा ने मंडार पुलिस थाना में रिपोर्ट दर्ज करवाई तथा उसके खिलाफ उच्च कार्यवाही

हेतु मंडार उपखंड क्षेत्र के सभी कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता व पदाधिकारीयों ने मानाराम चौधरी के साथ मिलकर रिपोर्ट दर्ज करवाई । ब्लांक कांग्रेस अध्यक्ष कृष्णवीर सिंह रोहुआ के नेतृत्व में एक डेलिगेशन सिरोही पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा । इस दौरान भवानी सिंह भटाणा, हर्षुल अग्रवाल साथ रहे तथा उसके खिलाफ उच्च कार्यवाही हेतु कहा। मंडार पुलिस थाना पहुंचे सभी कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता व पदाधिकारीयों ने रोष व्याप्त किया कहा कि इस प्रकार से देश की उच्च सदन में बैठने वाले राज्य सभा सांसद नीरज डांगी के विरुद्ध जिस भाषा का उपयोग किया है वो माफी के लायक नहीं है । एक सरकारी कर्मचारी को इस तरह की भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। मंडार पुलिस थाना में रिपोर्ट दर्ज करवाने पहुंचे, जिला कांग्रेस कमेटी उपाध्यक्ष सवाराम चौधरी, युवा नेता हिमपाल सिंह देवल, मानाराम चौधरी, भैराराम चौधरी, मुकेश कुमार रामपुरा, करसन लौहार, मुस्ताक सोरडा, प्रकाश चौधरी, रतन राणा, चंदुलाल अग्रवाल, महेश मेघवाल, पुष्पेन्द्र सिंह मगरीवाडा, महेश जोशी, सुरेश प्रजापत, समेत कई लोग पहुंचे।

सब्जी-मशाला फसलों में पौधसंरक्षण के उपाय की दी जानकारी

समय पर पौधसंरक्षण के उपाय सदैव प्रभावी होता है

♦भारत टाइम्स♦

बोरुंदा/सोहनलाल वैष्णव। कृषि-उद्यान विभाग के अधिकारियों ने कृषि क्षेत्र में सब्जी व मशाला फसलों का निरीक्षण किया। मौके पर मिर्च फसल का निरीक्षण के दौरान विभिन्न प्रकार के कीट-रोग के लक्षण एवं नियत्रंण के उपाय की दी विस्तृत जानकारी दी। सहायक कृषि अधिकारी रफीक अहमद कुरैशी ने मिर्च फसल का निरीक्षण करते हुए कहा कि मिर्च फसल मे विशेषकर पत्तियों मे पर्णकुंचन रोग से पत्ते सिकुड़ कर मुड़ जाते है। इस रोग का अधिक फैलाव मे कीट प्रमुख रूप सहायक होते है। पर्णकुचंन रोग नियंत्रण के उपाय करने की दी विस्तृत जानकारी। वैसे मिर्च पौध रोपाई के बाद ही रसचूसक कीटों का प्रकोप शुरू हो जाता है। जैसे थ्रिप्स, सफेद मक्खी, हरा तेला एवं माइट्स आदि की रोकथाम हेतु फसल पर कीट प्रकोप शुरू होते रोपाई के तीन सप्ताह बाद आवश्यकता अनुसार सिफारिश जैव आधारित कीटनाशक का छिड़क ाव को महत्व

देना चाहिए ताकि मिर्च के पौधों मे विभिन्न प्रकार के कीट-रोग से निजात मिले। जैव आधारित-नीम आधारित कीटनाशी का प्रयोग करना महत्वपूर्ण है। समय पर पौधसंरक्षण के उपाय करना सदैव प्रभावी होता है।कृषि-उद्यानिकी मे देय सुविधाएं में बूंद बूंद सिचांई संयत्र, बागवानी खेती पर देय योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी। इस मौके पर किसान कुर्शीद तेली, कानाराम मेघवाल, साबीर सहित कई किसान उपस्थित रहे।

जम्मूतवी-भगत की कोठी एक्सप्रेस 11 को बदले मार्ग से चलेगी

♦भारत टाइम्स♦

जोधपुर। उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल पर मेड़ता रोड-बीकानेर रेल खंड में नोखा-चीलो रेलवे स्टेशनों के मध्य आरयूबी लांचिंग के लिए 8 व 11 दिसंबर को ट्रैफिक ब्लॉक लिया जा रहा है जिससे जम्मूतवी-भगत की कोठी ट्रेन का संचालन प्रभावित होगा। जोधपुर डीआरएम पंकज कुमार सिंह ने बताया कि उपरोक्त कार्य के कारण नोखा-चीलो स्टेशनों के मध्य 8 दिसंबर को शाम 4.50 से 7.20 बजे तक ढाई घंटे एवं 11 दिसंबर को अपराह्न 3 से सायं 6.30 बजे तक साढ़े तीन घंटे ट्रैफिक ब्लॉक लिया जाएगा जिससे ट्रेन 19226,जम्मूतवी-भगत की कोठी एक्सप्रेस जो 10 दिसंबर जम्मूतवी से प्रस्थान करेगी वह अगले दिन अपने निर्धारित मार्ग वाया बीकानेर-मेड़ता रोड-जोधपुर की जगह बीकानेर-लालगढ़-फलोदी-जोधपुर के परिवर्तित मार्ग से संचालित होगी।

पीपाड़ शहर बार ऐसोसिएशन के चुनाव 13 दिसंबर को होगे

♦भारत टाइम्स♦

बोरुंदा/सोहनलाल वैष्णव। पीपाड़ शहर बार ऐसोसिएशन संघ पीपाड़ शहर के चुनाव 13 दिसंबर को बार ऐसोसिएशन भवन में होगे। चुनाव को लेकर वरिष्ठ अधिवक्ता विजय प्रकाश ओझा व सग्रामसिह चोहान को चुवाव अधिकारी नियुक्त किया गया है। वही चुनाव को लेकर शनिवार को संघ की आभ सभा अध्यक्ष रामकिशोर सांखला की अध्यक्षता में आयोजित हुई इस दोरान संघ के चुनाव को लेकर चर्चा के अलावा चुनाव का कार्यक्रम भी घोषित किया गया है। आम सभा में कोई भी नया अधिवक्ता बार संघ मे 9 दिसंबर को 11 बजे तक बार एसोसिएशन की सदस्यता ग्रहण कर सकता है तथा अगले दिन 10 दिसंबर को अंतिम अधिवक्ता मतदाता सूची का प्रकाशन कर दिया जाएगा वही बार ऐसोसिएशन के 2025 के लिए होने वाले चुनाव को लेकर 9 दिसंबर दोपहर 2 बजे से 10 दिसंबर दोपहर 3 बजे तक सभी पदो के लिए आवेदन पत्र चुनाव अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किए जा सकेंगे पश्चात नामांकन पत्रो की जाच व शाम 5.30 बजे अंतिम सूची का प्रकाशन कर दिया जाएगा। जबकि मतदान 13 दिसंबर को सुबह 10 से 3 बजे दोपहर तक बार सभा भवन में होगे। मतदान पश्चात मतगणना होगी व सांय सवा चार बजे अंतिम परिणामों की घोषणा की जाएगी।

आवश्यकता
भारत टाइम्स न्यूज को रिपोर्ट्स ओर अनुभवी मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव की आवश्यकता है। यदि आप हमसे जुड़ना चाहते है तो अपना बॉयोडाटा हमे ईमेल करे।
Bharattimesnews01@gmail.com
Whatsapp
9509745147
9799911545

हिंदी भाषा ही हमारी मूल भाषा इस पर गर्व होना चाहिए - केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव

♦भारत टाइम्स♦

अलवर/राजेश गुप्ता । अलवर सांसद और केंद्रीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेंद्र सिंह यादव ने आज बहरोड़ क्षेत्र के तक्षशिला स्कूल के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में शिरकत की। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने हिंदी भाषा के लिये निजी विद्यालयों से कहा कि अंग्रेजी माध्यम कहने से फीस ज्यादा मिलती है, लेकिन बच्चों को चाहे अंग्रेजी सिखाएं लेकिन स्टूडेंट अपनी भाषा हिंदी पर गर्व करें ऐसा सिखाएं। जब बच्चों के अभिभावक आए तो हिंदी में बताएं। उन्होंने कहा कि में बच्चों के लिए लाइब्रेरी चलाता हूं वहां पर उनके मां-बाप और बच्चे दोनों को साथ बैठता हूं क्योंकि मां-बाप अलग सोचते हैं और बच्चा अलग सोचता है, उनसे हिंदी में बात कर माता-पिता और बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाना ही हमारा काम है। केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने शिक्षा को लेकर केंद्र सरकार की और से उठाये जा रहे कदम की जानकारी देते हुए कहा कि, शिक्षा के क्षेत्र में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एक नई एजुकेशन पॉलिसी लाए हैं, उसका विस्तार होना चाहिए सभी को उसे समझना चाहिए,

क्योंकि शिक्षा से ही समाज का सर्वांगीण विकास हो सकता है। केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि विशेष रूप से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का जो विजन है, उसमें खेलो इंडिया एक बड़ा विजन है उसके लिए अलवर में सांसद खेल उत्सव भी किया जा रहा है। केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने विद्यार्थियों को लेकर कहा कि हाल ही में जो केंद्र सरकार ने अटल टिंकरिंग लैब का विस्तार किया है वह छात्रों के लिए बहुत ही लाभदायक साबित होगी अटल टिंकरिंग लैब योजना का उद्देश्य युवा मन में जिज्ञासा, रचनात्मकता और कल्पना को बढ़ावा देना है और उनमें डिजाइन मानसिकता, कम्प्यूटेशनल सोच, अनुकूली शिक्षा, भौतिक कंप्यूटिंग आदि जैसे कौशल विकसित करना है। केंद्र सरकार का जो स्ट्रिम है उसके लिए हम क्षेत्र में कार्य करेंगे शिक्षा में एक स्वच्छ वातावरण पैदा हो इसके लिए सब का सहयोग लेंगे। केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि अशोक गहलोत दो बार मुख्यमंत्री रहने के बावजूद भी ईआरसीपी पर कोई काम नहीं कर पाए वह काम भजनलाल सरकार ने कर दिखाया है। जो अशोक गहलोत सरकार में केबीएनआर पीछे पड़ा था, उसको आगे बढ़कर रिसर्जन राजस्थान का काम भजनलाल सरकार ने किया है। राजस्थान में लंबे समय से हरियाणा से चंबल वाले पानी के विषय पर भी भजनलाल सरकार ने काम किया है। यह सब देख ही रहे हैं कि एक जमीन से निकला हुआ राजस्थान का बेटा किस तरह राजस्थान के विकास के लिए काम कर रहा है। उसके बाद केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने बहरोड के माँचल ग्राम पंचायत में नवनिर्मित सड़क का उद्घाटन किया इस दौरान बहरोड़ विधायक जसवंत यादव, जिला प्रमुख बलबीर सिंह छिल्लर, बहरोड पंचायत समिति प्रधान सरोज यादव, एडवोकेट बस्तीराम यादव, जिला क्रिकेट एसोसिएशंस प्रेसिडेंट मोहित यादव, सरपंच ओम प्रकाश यादव सहित अनेक भाजपा कार्यकर्ता और ग्रामवासी मौजूद रहे।

युवा खेल महोत्सव के आयोजन का हुआ आगाज

रामगढ़ विधायक सुखवंत सिंह ने कार्यक्रम का किया उद्घाटन

♦भारत टाइम्स♦

गोविन्दगढ़ /अलवर /मुकेश शर्मा। गोविन्द गढ़ कस्बे के समीप ग्राम रामबास के सीनियर सेकेंडरी स्कूल में युवा खेल महोत्सव कार्यक्रम शुरू हुआ इस आयोजन के मुख्य अतिथि रामगढ़ विधान सभा के विधायक सुखवंत सिंह, विशिष्ट अतिथि गोविन्द गढ़ पंचायत समिति के प्रधान प्रतिनिधि गोपाल चौधरी, रामबास सरपंच भोंती देवी रही। कार्य क्रम की अध्यक्षता तहसीलदार आर के यादव ने की। कार्यक्रम की शुरूआत सरस्वती वंदना से हुई। ब्लाक शिक्षा अधिकारी विश्व जीत सिंह ने सभी आगंतुक गणों का बड़ी माला से स्वागत किया एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। रामगढ़ विधायक सुखवंत सिंह ने युवा खेल महोत्सव के आयोजन में हिस्सा लेने वाले सभी युवा वर्ग को धन्यवाद दिया और खेल भावना पर बल दिया युवा महोत्सव में 690 रजिस्ट्रेशन हुए जिनमें से करीब 100 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव की अभी शंसा पर रामबास के सीनियर सेकेंडरी स्कूल में ई लाइब्रेरी की स्वीकृति जारी की गई। जिसकी रामगढ़ विधायक सुखवंत सिंह ने घोषणा की ओर कहा कि केंद्रीय मंत्री ने पूर्व में रामबास मे पुस्तकालय खोलने की

घोषणा की थी जिसकी वित्तीय स्वीकृति जारी हो गई है। और इस के खुलने से विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा। खेल मैदान में चार दिवारी की मांग पर शीघ्र ही बजट जारी करने की बात कही कार्यक्रम में सीनियर सेकेंडरी स्कूल के सभी स्टाफ गण उपस्थित रहे।

समाज की प्रतिभावान छात्राओं लिए दिया शिक्षा नेग

♦भारत टाइम्स♦

दिनेश प्रजापत। जोजावर गोविंद राजपूत शिक्षण संस्थान राणावास द्वारा संचालित शिक्षा नेग कोष के रूप में राजपूत समाज की आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभावान छात्राओं की शिक्षा में सहयोग कर रहा है। इसके लिए शिक्षा नेग देने की एक पहल की गई थी, जो अब परम्परा का रूप लेती जा रही है। संस्थान के अध्यक्ष छैल सिंह सोलंकी मेवी ने बताया कि पाली जिले में राजपूत समाज के विवाह समारोहों एवं अन्य सामाजिक समारोहों में शिक्षा नेग दिया जा रहा है। इसी के तहत धनला के कुशाल सिंह कुम्पावत ने शिक्षा नेग कोष में अपनी पुत्री डॉक्टर प्रियदर्शिनी कुंपावत की शादी में राजपूत शिक्षा नेग कोष राणावास में 11 हजार रुपए का शिक्षा नेग दिया। आप श्री से प्रभावित होकर इनके संबंधी मनोहर सिंह ,विरोली ने भी अपने पुत्र वर्तमान में भारतीय सेना में कैप्टन निकिलराज सिंह देवड़ा के विवाह के उपलक्ष में 11 हजार

रुपए का शिक्षा नेग बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए दिया। वर और वधू पक्ष दोनो परिवारों को नेग देने पर समाज के गणमान्य बंधुओ द्वारा आभार जताया गया इस अवसर पर मूल सिंह ,प्रह्लाद सिंह देवड़ा , छोटू सिंह,भगवान सिंह, जेठू सिंह कुंपावत ,संस्थान के व्यवस्थापक नारायण सिंह गुड़ा सूरसिंह आदि मौजूद रहे।

डीएलएड प्रथम वर्ष की परीक्षाएं 7 दिसंबर से

बगड़ी नगर (महेंद्र सिंह)। कार्यालय पंजीयन शिक्षा विभाग परीक्षाएं बीकानेर राजस्थान के निदेर्शा अनुसार प्रदेश भर की जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में अध्ययनरत डीएलएड प्रथम वर्ष के नियमित व पूर्ववर्ती के परीक्षार्थियों की क्रियात्मक अभ्यास शिक्षण की परीक्षाओं का आयोजन 7 दिसंबर से 10 दिसंबर तक अपनी अध्यनरत संस्थान में ही होगी ।

गौपुत्र सेना पाली संभाग अध्यक्ष बने दिनेश मेवाड़ा

♦भारत टाइम्स♦

बगड़ी नगर - महेंद्र सिंह। सोजत निवासी दिनेश मेवाड़ा को गौपुत्र सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश शीला व प्रदेश अध्यक्ष भरत जोशी द्वारा पाली संभाग अध्यक्ष एवं प्रदेश कोषाध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया गया दिनेश मेवाड़ा 10 वर्षों से गौपुत्र सेना जुडे हुये व 6 वर्ष से जिला प्रभारी के रूप मे सेवाएं दे रहे हैं। गौपुत्र सेना जिला संरक्षक भरत वैष्णव, पूर्व जिला अध्यक्ष राजकुमार सोनी, प्रदेश उपाध्यक्ष धनराज प्रजापत, जिला कोषाध्यक्ष बालकिशन उणेचा, जिला उपाध्यक्ष रवि मेवाड़ा, जिला प्रचारक अमन सोनी, प्रकाश राठौड़, मारवाड तहसील अध्यक्ष भेराराम प्रजापत मुसालिया, हेमाराम गेहलोत, गौतम परिहार, सोजत रक्तदान प्रभारी चंद्रप्रकाश तवर, मुकेश कच्छवाह, नरेश अग्रवाल आदि ने खुशी जताई हैं।

रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने किया कटक रेलवे स्टेशन के पूर्वी प्रवेश द्वार का उद्घाटन, यात्रियों की सुविधा में हुई वृद्धि

♦भारत टाइम्स♦

भुवनेश्वर। रेल, सूचना एवं प्रसारण और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव ने आज शाम कटक रेलवे स्टेशन के पूर्वी प्रवेश द्वार का उद्घाटन किया, जो अमृत स्टेशन योजना के तहत स्टेशन पुनर्विकास में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नया प्रवेश द्वार और पूर्वी स्टेशन भवन यात्रियों के यात्रा के अनुभव को परिवर्तित करने के लिए तैयार है, जो बेहतर पहुंच, सुरक्षा और सुविधा प्रदान करेगा। पूर्वी प्रवेश द्वार को राष्ट्रीय राजमार्ग की ओर से आने वाले यात्रियों के निर्बाध आवागमन के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे स्टेशन अधिक सुलभ बनेगा और बिना किसी परेशानी के यात्रियों को पहुंचने में मदद मिलेगी। यह विकास 303 करोड़ रुपये की महत्वाकांक्षी परियोजना का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य कटक रेलवे स्टेशन को विश्वस्तरीय सुविधाओं वाले आधुनिक परिवहन केंद्र के रूप में पुनर्विकसित करना है। उद्घाटन के

पूर्वी स्टेशन भवन की प्रमुख विशेषताएँ

वातानुकूलित स्थानः 21,270 वर्ग फीट का वातानुकूलित क्षेत्र, जो यात्रियों के लिए आरामदायक वातावरण सुनिश्चित करता है। आधुनिक सुविधाएँः इसमें 2,100 वर्ग फीट का फूड कोर्ट, आधुनिक शौचालय, टिकट काउंटर, प्रतीक्षालय, एस्केलेटर, लिफ्ट और अन्य सुविधाएँ शामिल हैं। सुगम्य प्रवेशः एस्केलेटर और लिफ्ट के साथ सुगम्य-अनुरूप सुविधाएँ, जिससे सभी यात्रियों, विशेषकर दिव्यांगजनों के लिए पहुंच सुनिश्चित हो सके। बेहतर यात्री सुविधाएँः विशाल परिसंचरण क्षेत्र, पार्किंग और पिकअप/ड्रॉप-ऑफ सुविधाएँ, जिससे स्टेशन तक पहुँच आसान हो जाएगी।

मुख्य लाभ

कटक और आसपास के जिलों के लोगों के लिए बेहतर पहुंच की लंबे समय से चली आ रही मांग को पूरा करना। कटक रेलवे स्टेशन से यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए कनेक्टिविटी में वृद्धि। फूड कोर्ट, प्रतीक्षालय और सुगम्य शौचालय जैसी आधुनिक सुविधाओं के साथ यात्री अनुभव में सुधार। यात्रियों के लिए बिना किसी परेशानी के सुरक्षित, तेज और कुशल यात्रा सुनिश्चित करना। श्री वैष्णव की यह यात्रा पूर्वी भारत में रेलवे अवसंरचना को सुधारने और नागरिकों के लिए समग्र यात्रा अनुभव को बेहतर बनाने की सरकार की प्रतिबद्धता को दशार्ती है। इस अवसर पर कटक से लोकसभा सांसद श्री भर्तृहरि महताब महताब, माननीय विधायक और अन्य प्रमुख हस्तियाँ और जनप्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

अवसर पर अपने संबोधन में श्री वैष्णव ने इस विकास के महत्व पर जोर दिया। इससे यात्री अनुभव में सुधार होगा और क्षेत्र की कनेक्टिविटी में वृद्धि होगी। उन्होंने बताया कि यह परियोजना व्यापार और वाणिज्य को प्रोत्साहन देकर सामाजिक-आर्थिक विकास में भी योगदान देगी, जिससे कटक रेलवे स्टेशन इस क्षेत्र का प्रमुख केंद्र बन जाएगा। अतिरिक्त सेवाएँः इसमें प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि केंद्र (पीएमबीजेके), एटीएम किओस्क, ऑटोमेटिक टिकट वेंडिंग मशीन (एटीवीएम), और वन स्टेशन वन प्रोडक्ट (ओएसओपी) ट्रॉलियाँ शामिल हैं, जो महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा बनाए गए स्थानीय हस्तशिल्प को बढ़ावा देती हैं।

रामधाम खेड़ापा में आयुर्वेद चिकित्सा शिविर

तृतीय दिन शिविर में अर्श-भगंदर के 35 रोगी चयनित

- 10 दिवसीय नि:शुल्क आयुर्वेद क्षार सूत्र शल्य चिकित्सा शिविर के तृतीय दिन 130 रोगी लाभान्वित

♦भारत टाइम्स♦

बगड़ी नगर (महेंद्र सिंह)। खेड़ापा रामधाम में उपनिदेशक आयुर्वेद विभाग जोधपुर द्वारा 10 दिवसीय निःशुल्क अर्श भगंदर क्षार सूत्र शल्य चिकित्सा शिविर के तीसरे दिन आयुर्वेदिक दवाओं के 108 व अर्श भगंदर के 22 रोगीयो का चयन किया गया। जिसमे 12 रोगियों की शल्य चिकित्सा की गई। योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा में

आहार चिकित्सा, कपिंग थेरेपी, मृतिका उपचार द्वारा 27 रोगी लाभान्वित हुए। शिविर प्रभावी डॉ. एडीपी सिंह ने बताया कि शिविर में प्रथम व दूसरे दिन अर्श भगंदर के रोगियों को चयनित कर आज बुधवार से रोगियों की शल्य चिकित्सा की गई। शिविर में डॉ. राजूराम काला, डॉ. बुधराम ग्वाला, डॉ. रामलाल जाट (योग एवं प्राकृतिक चिकित्सक) डॉ.नवल सोलंकी, डॉ. श्यामसुंदर सारण, डॉ प्रीति चोरटीया, डॉ.महेंद्र बेडा, डॉ. अशोक, वरिष्ठ कंपाउंडर भोमाराम चौधरी, सुनील गौड़, प्रीति खोखर, भावना सोलंकी, खेत सिंह, भरत दाधीच आदि ने सेवा दी।

बाली गौडवाड सीरवी समाज सीरवी आईजी युवा समिति कि बैठक संपन्न

♦भारत टाइम्स♦

बाली। आईमाताजी मन्दिर प्रांगण में सीरवी आईजी युवा समिति कि बैठक समाज के कोटवाल नथाराम सोलंकी व जमादारी कानाराम काग के सानिध्य व समिति अध्यक्ष अशोक कुमार गहलोत की अध्यक्षता में बैठक में सीरवी आईजी युवा समिति की कार्यकारणी का कार्यकाल 30/125 जनवरी को पुर्ण होने जा रहा है। समिति की नवी कार्यकारणी के चुनाव कों लेकर संस्था नियमानुसार सदस्यता अभियान जारी है सदस्यता शुल्क 151 रुपए कोषाध्यक्ष के पास जमा करा सकते हैं। बैठक में समिति उपाध्यक्ष ओटाराम परमार, कोषाध्यक्ष जसाराम गहलोत, सचिव भोलाराम राठौड़, पुर्व अध्यक्ष जगाराम सोलंकी,मुलाराम गहलोत, जसाराम सोलंकी, धन्नाराम सीरवी, मदनलाल सीरवी, रामलाल चौधरी, चुन्नीलाल, पकाराम सीरवी,दिपाराम मानाराम चौधरी एवं आईमाताजी मन्दिर पुजारी मागुमहाराज सहित बड़ी संख्या समाज गणों ने अपने अपने सुझाव रखें। यह जानकारी सीरवी आईजी युवा समिति के मिडिया प्रभारी खेताराम महाराज ने दी।

आई माताजी धर्म रथ बैल का किया भव्य बधावा

♦भारत टाइम्स♦

पाली। मारवाड़ री पावन धन्य धरा जिला मुख्यालय पाली तहसील सोजत सिटी ग्राम पंचायत धाकड़ी श्री आई माताजी का धर्म रथ भैल धर्म प्रचार भ्रमण पर पधारे उनके उपलब्ध मे गांव बागावास के कोटवाल जमादारी समस्त पंचो री सहमती से गाजा बाजा जोत तिलक करके भव्य स्वागत किया महिलाओं ने श्री आई माताजी के मंगल गीत गाते हुए श्री आई माताजी के भक्त ज्यादा से ज्यादा संख्या में पधार कर दर्शन किये श्री आई माताजी के भक्तों को बहुत खुशी हुई कि आज हमारा भाग्य बहुत शोभय मान है कि आई माताजी हमारे को दर्शन देने के लिए पधारे और साथ मे श्री आई माताजी का धर्म रथ भैल के साथ आए जती बाबा मंडली के पुना महाराज, खेता महाराज,राजेंद्र पंवार,बाबूलाल परिहार, रतनलाल राठौड, शंकर हाम्बड का स्वागत किया किया।आज विक्रम संवत २०८१ मिती मिगसर सुदी पांचम शुक्ल पक्ष शुक्रवार दिनांक 6 दिसंबर सन 2024 को भव्य बधावा किया गया।

राजस्थान के सिर्वी समाज के गांवों से प्रत्येक परिवार से श्रद्धानिधि दी गई

आईपंथ के मालवा निमाड़ के जती महेंद्र बाबाजी द्वारा ट्रस्ट के अध्यक्ष को राशि सौपी गई

♦भारत टाइम्स♦

खरगोन। महेश्वर में नर्मदा किनारे श्री नरसिंह टेकरी स्थित सिर्वी समाज एवं आईपंथ के 10-वे धर्मगुरु दीवान श्री हरिदासजी के स्मारक पर श्रद्धालु उपस्थित हुए। निमाड़-मालवा के आईपंथ के जती महेंद्र बाबाजी के साथ सभी सिर्वी समाजजनों ने आदिशक्ति श्री आईमाता की आरती एवं पूजन किया। विगत दिनों, वर्तमान धर्मगुरु दीवान माधवसिंह ने सभी आईपंथी सिर्वी समाज जनों से आह्वान किया था कि इस पावन स्थल के विकास हेतु प्रत्येक परिवार से श्रद्धानिधि एकत्रित कर इस प्रकल्प में समर्पित की जाये। इसी क्रम में राजस्थान के ब्यावर जिले की जैतारण तहसील के लगभग तीस (30) गांवों से दीवान माधवसिंहजी की प्रेरणा से एकत्र 03 लाख 18 हजार 111 रु. की श्रद्धानिधि जती महेंद्र बाबाजी द्वारा ट्रस्ट के अध्यक्ष लक्ष्मणसिंह काग के माध्यम से समर्पित की गई। जती महेंद्र बाबाजी ने इस अवसर पर अपने प्रबोधन में कहा कि आईपंथ हमे सनातन के पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। यह समाज के

सशक्तिकरण का पंथ है। हरिदासजी स्मारक आईपंथ की श्रद्धा एवं आस्था का केंद्र है, इसे तीर्थ के रूप में विकसित करने के लिए प्रत्येक समाजजन को आगे आना चाहिए। लगभग छः (6) सौ वर्ष पूर्व श्री आईमाता ने लोक कल्याण के लिये आईपंथ की स्थापना की थी। पंथ को आगे चलाने एवं अनुयायियों के मार्गदर्शन हेतु दीवान परंपरा की शुरूवात भी स्वयं माताजी ने ही की थी। पंथ के दसवे दीवान श्री हरिदासजी वि.सं. 1842 (ईस्वी सन 1785) में धर्म प्रसार हेतु बिलाड़ा (राज.) से महेश्वर आए थे। उसी समय आपने यहाँ अपने घोड़े पर सवार होकर माँ नर्मदा के जल पर चलते हुए आईशक्ति का पर्चा दिया था और यहीं पर योगबल से देह त्यागकर समाधि ले ली थी। महारानी अहिल्याबाई द्वारा उनकी स्मृति में जो स्मारक बनवाया गया था वह आज भी सिर्वी समाज एवं समूचे आईपंथ की श्रद्धा एवं आस्थ का केंद्र है। ट्रस्ट द्वारा यहाँ पर आईमाता का मंदिर एवं सामुदायिक भवन तथा अन्य विकास कार्य कराये जा रहे हैं। इस तीर्थ क्षेत्र के विकास में समाज के साथ-साथ शासन स्तर से भी सहयोग प्राप्त हो रहा है। राजस्थान से आज जो श्रद्धानिधि प्राप्त हुई है उसे भी आदिशक्ति आईमाता के मंदिर एवं पावन प्रकल्प में उपयोग किया जाएगा। इस अवसर पर ट्रस्ट अध्यक्ष लक्ष्मणसिंह काग (सिरलाय), म.प्र. सिर्वी समाज के पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश मुकाती वीआईपी. ट्रस्ट के वरिष्ठ उपाध्यक्ष लक्ष्मण परिहार (जाजमखेड़ी) श्रद्धानिधि अभियान प्रभारी नरेंद्र सिर्वी, निर्माण समिति प्रमुख भगवान जमादारी, कोषाध्यक्ष गोविंद सेप्टा (कोटवाल) पूर्व अध्यक्ष ओमप्रकाश परिहार, महासचिव दिलीप पटेल (खोड़ी) तथा ट्रस्ट के अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे।

तन सिंह की पुण्यतिथि श्रद्धा पूर्वक मनाई

♦भारत टाइम्स♦

बगड़ी नगर महेंद्र सिंह। निकटवर्ती ग्राम सारंगवास में क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक श्री तन सिंह जी की पुण्यतिथि श्रद्धापूर्वक मनाई । संघ के स्वयंसेवक बहादुर सिंह सारंगवास ने तन सिंह जी की जीवनी पर प्रकाश डाला तथा तन सिंह जी के बताएं मार्ग पर चलकर समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने का संकल्प लिया । तन सिंह जी की 45वीं पुण्यतिथि पर समाजसेवी श्रवण सिंह सारंगवास उप सरपंच प्रतिनिधि खीम सिंह हरियामाली डिक्सा जैतावत, रुद्र प्रताप सिंह, सार्थक, रेनू, नैना, पीयू जैतावत, जाह्नवी, खुशवीर, कुमकुम, भैरसा सहित कई समाज बंधु व बालिकाएं मौजूद थी।

देवेंद्र फडणवीस भाजपा के लिए चाणक्य बन चमक रहे हैं

सामने कोई भी हो शह और मात के खेल में उनकी जीत अब गारंटी बन चुकी है। वे भाजपा के लिए चा क्य हैं तो विपक्ष के लिए अबूझ पहेली। पिछले एक दशक से महाराष्ट्र की राजनीति उनके ही इर्द-गिर्द घूम रही है। ऐसे कद्दावर राजनेता के नेतृत्व में निश्चित ही अगली पारी सफल होने वाली है।

महाराष्ट्र में सरकार गठन की राजनीति में दस दिन की सघन वाताओं और खासी नाटकीयता के बाद आखिर अंधेरा छंट गया और देवेंद्र फडणवीस तीसरी बार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं। फडणवीस का मुख्यमंत्री बनना न केवल महाराष्ट्र बल्कि देश की राजनीति को एक नई दिशा एवं दृष्टि देगा। क्योंकि फडणवीस ने अपने राजनीतिक कौशल से न केवल नये मानक गढ़े हैं बल्कि सकारात्मक राजनीति को नये आयाम दिये हैं। हार का कारण स्वयं को मानने एवं जीत का श्रेय पार्टी एवं सहयोगी दलों को देने की विराट सोच रखने वाले फडणवीस को अब भाजपा के शीर्ष नेताओं में शुमार किया जाने लगा है। फडणवीस ने राजनीति के चाणक्यों के चक्रव्यूहों को कुछ ऐसा भेदा कि लोग उन्हें आधुनिक अभिमन्यु भी कहने लगे। बात सही भी है फडणवीस अब किसी चक्रव्यूह में फंसते नहीं बल्कि उसे भेदकर बाहर निकलते हैं। सामने कोई भी हो शह और मात के खेल में उनकी जीत अब गारंटी बन चुकी है। वे भाजपा के लिए चाणक्य हैं तो विपक्ष के लिए अबूझ पहेली। पिछले एक दशक से महाराष्ट्र की राजनीति उनके ही इर्द-गिर्द घूम रही है। ऐसे कद्दावर राजनेता के नेतृत्व में निश्चित ही अगली पारी सफल होने वाली है। बावजूद इसके विशाल बहुमत वाली इस सरकार के मुखिया के तौर पर फडणवीस की यह पारी किसी भी रूप में कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। फिर भी महाराष्ट्र को राजनीतिक स्थिरता और विकास के नए दौर में ले जाने की जिम्मेदारी निभाते हुए वह हर चुनौती के पार जायेंगे, लोगों ने उनकी पार्टी और सहयोगी दलों पर जो भरोसा जताया है, महायुति सरकार उनकी उम्मीदें पूरी करके एक नये इतिहास का सृजन करेंगी, इसमें कोई शंका दूर तक नजर नहीं आती। तीसरी बार मुख्यमंत्री का ताज पहनने वाले देवेंद्र फडणवीस ने प्रखर राजनेता, अजातशत्रु, दूरदर्शी नायक एवं महाराष्ट्र-निमार्ता के रूप में न केवल देश के लोगों का दिल जीता है, बल्कि विरोधियों के दिल में भी जगह बनाकर, अमिट यादों को जन-जन के हृदय में स्थापित कर अनेक राजनीतिक कीर्तिमान स्थापित किये हैं। फडणवीस यह नाम महाराष्ट्र राजनीतिक इतिहास का एक ऐसा स्वर्णिम पृष्ठ है, जिससे एक सशक्त जननायक,

स्वप्नदर्शी राजनायक, आदर्श चिन्तक, नये महाराष्ट्र के निमार्ता, कुशल प्रशासक के साथ-साथ राजनीति को एक खास रंग देने की महक उठती है। उनके व्यक्तित्व के इतने रूप हैं, इतने आयाम हैं, इतने रंग हैं, इतने दृष्टिकोण हैं, जिनमें वे व्यक्ति और नायक हैं, प्रशासक और राजनेता हैं, प्रबुद्ध और प्रधान है, वक्ता और नेता हैं, शासक एवं लोकतंत्र उन्नायक हैं। महाराष्ट्र राजनीति की एक खास स्थिति जहां सहयोगी दलों की आकांक्षाओं का ध्यान रखने और उन्हें यथासंभव संतुष्ट रखने की जरूरत से जुड़ी चुनौती है वहीं आगामी स्थानीय निकाय चुनावों में महायुति से जुड़े दलों पर बेहतर प्रदर्शन की बड़ी जिम्मेदारी है। हालांकि पहली चुनौती मंत्रिमंडल में विभागों के बंटवारे को संतोषजनक ढंग से निपटाने की है। एक बड़ी चुनौती महाराष्ट्र में भाजपा की ताकत को बलशाली बनाने की भी है। इन सब चुनौतियों एवं परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाने एवं उनसे पार पाने की क्षमता फडणवीस में दिखती है। जो व्यक्ति 2022 में एकनाथ शिंदे मंत्रिमंडल में मुख्यमंत्री की बजाय उपमुख्यमंत्री की भूमिका मंजूर कर लेता है, पद से ज्यादा पार्टी हित को सामने रखता है, विशिष्ट परिस्थितियों में पार्टी के आग्रह पर न केवल सरकार का सुचारू संचालन सुनिश्चित करता है बल्कि चुनाव में पार्टी की अगुआई करते हुए उसे शानदार जीत भी दिलाता है, तो उन्हें मुख्यमंत्री की भूमिका सौंपी जा रही है तो अपनी पात्रता तो वह पहले ही अच्छी तरह सिद्ध कर चुके हैं, अब तो शासन के नये मानक गढ़ने है। यह स्पष्ट है कि देवेंद्र फडणवीस के राजनीतिक जीवन के नए दौर की शुरूआत संभावनाभरी है। भाजपा विधायक दल का नेता चुने जाने के बाद उन्होंने अपने भाषण में हिंदवी स्वराज से लेकर अहिल्याबाई होलकर का नाम लेकर अपनी राजनीतिक धारा को बिल्कुल स्पष्ट किया। चुनाव प्रचार के दौरान भी उनकी छवि आत्मविश्वास से भरे हिंदुत्ववादी शुद्ध स्वयंसेवक भाजपा नेता की बनी। उन्होंने कट्टरपंथी मुस्लिम नेताओं और उनको समर्थन देने वाले महाविकास आघाड़ी के विरुद्ध लगातार प्रखर प्रहार से अपनी छवि वर्तमान राजनीतिक धारा के अनुरूप बनाई। चुनाव के समय लगा था कि एक हैं तो सेफ हैं और बंटेंगे तो कटेंगे नारे को लेकर महायुति में मतभेद के बावजूद उन्होंने गजब का संतुलन बनाते हुए इन नारों के बल पर महायुति की जीत को उच्च शिखर देकर सबको आश्चर्यचकित किया। महायुति सरकार की नई पारी पिछली पारी जैसी सहजता और स्थिरता दिखा पाएगी या नहीं यह सवाल तो खड़ा ही है, लेकिन इस सवाल को नकारते हुए नयी सरकार अपना पूरा कार्यकाल उतार-चढ़ाव के बावजूद निष्कंटक पार करेगी। दो पुरानी और सुगठित राजनीतिक पार्टियों में हुई असाधारण तोड़फोड़ के परिणास्वरूप बनी महायुति ने हालांकि 2024 विधानसभा चुनावों में अपनी सार्थकता सिद्ध कर दी है और इसलिए अब इसे किसी भी रूप में कृत्रिम गठबंधन नहीं कहा जा सकता। फिर भी नए मुख्यमंत्री और भाजपा नेतृत्व को सहयोगी दलों को साथ लेकर चलने और किसी भी असंतोष से बचने पर खास ध्यान देना होगा। फडणवीस का राजनीतिक जीवन अनेक विशेषताओं एवं उपलब्धियों से भरा रहा है। उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के माध्यम से उसकी शुरूआत की। उनके पिता स्व. गंगाधरराव फडणवीस विधान परिषद सदस्य थे। लेकिन इस राजनीतिक विरासत का सहारा लेने के स्थान पर फडणवीस ने अपनी खुद की पहचान बनाई। सामान्य कार्यकर्ता की तरह खुद को तराशा। वे सदा दूसरों से भिन्न रहे, अनूठे रहे। घाल-मेल से दूर। भ्रष्ट राजनीति में बेदाग। विचारों में निडर। टूटते मूल्यों में अडिग। घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। वे भारत के इतिहास में उन चुनिंदा नेताओं में शामिल हैं जिन्होंने सिर्फ अपने नाम, व्यक्तित्व और करिश्मे के बूते पर न केवल सरकार बनाई बल्कि एक नयी सोच की राजनीति को पनपाया, पारदर्शी एवं सुशासन को सुदृढ़ किया। 2014 में पहली बार महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बनने के बाद फडणवीस अपनी कल्पनाशीलता, दूरदर्शिता, दृढ़संकल्प, राजनीतिक कौशल एवं अभिनव परियोजनाओं के माध्यम से उन्होंने अपनी असीम क्षमताओं को आकार दिया। उनकी नेतृत्व क्षमता और लोकप्रियता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि 2014, 2019 और 2024 के विधानसभा के चुनाव भाजपा ने फडणवीस के नेतृत्व में लड़े और शानदार प्रदर्शन किया, तीनों बार भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। 2019 में उनके नेतृत्व में भाजपा की चुनावी जीत के बावजूद अविभाजित शिवसेना के मुखिया उद्धव ठाकरे की जिद के कारण वह मुख्यमंत्री नहीं बन पाए, हालांकि राकांपा नेता अजित पवार के साथ मिलकर उस वक्त उन्होंने तीन दिन की सरकार जरूर बनाई। यह प्रयोग विफल होने के बाद उनके विरोधियों ने उनकी रणनीतिक क्षमता पर सवाल भी उठाए थे लेकिन देवेंद्र फडणवीस को अपनी क्षमता पर पूरा भरोसा था और उन्होंने कहा भी था कि वे पूरे जोश से आयेंगे, तमाम तूफानों के बीच से विजेता की तरह फिर उभरेंगे।

हिंदुओं पर जारी हिंसा के बीच भारत का बड़ा कदम

पिछले बांग्लादेश में हिंदुओं पर जारी हिंसा के बीच भारत ने बड़ा कदम उठाया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को कहा कि विदेश सचिव 9 दिसंबर को बांग्लादेश का दौरा करेंगे और वे अपने समकक्ष से मिलेंगे। इस यात्रा के दौरान कई अन्य बैठकें भी होंगी। विदेश सचिव के नेतृत्व में विदेश कार्यालय परामर्श भारत और बांग्लादेश के बीच एक मजबूत जुड़ाव है। हम इस बैठक की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मसूद अजहर के खिलाफ कड़ी कार्रवाई हो मसूद अजहर पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि वह संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित आतंकवादी है। हम मांग करते हैं कि उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए ताकि उसे न्याय के कटघरे में लाया जा सके। इस बात से इनकार किया गया है कि वह पाकिस्तान में नहीं है। आप जिस बात का जिक्र कर रहे हैं, अगर रिपोर्ट सही हैं तो इससे पाकिस्तान का दोहरा चरित्र उजागर होता है। मसूद अजहर भारत में सीमा पार से होने वाले आतंकी हमलों में शामिल है। हम चाहते हैं कि उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। सीरिया की घटना पर भारत की पैनी नजर सीरिया में हाल के घटनाक्रमों पर विदेश मंत्रालय ने कहा कि हमने सीरिया के उत्तर में हाल ही में लड़ाई में हुई वृद्धि पर ध्यान दिया है। हम स्थिति पर बारीकी से नजर रख रहे हैं। सीरिया में लगभग 90 भारतीय नागरिक हैं, जिनमें संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न संगठनों में काम करने वाले लोग भी शामिल हैं। हमारे दूतावास अपने नागरिकों की सुरक्षा और संरक्षा के लिए उनके साथ निकट संपर्क में हैं। दक्षिण कोरिया और भारत के मजबूत संबंध हैं दक्षिण कोरिया में हाल ही में हुई अशांति पर विदेश

मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि दक्षिण कोरिया और भारत के बीच मजबूत आर्थिक और राजनीतिक साझेदारी है। हम घटनाक्रम पर नजर रख रहे हैं। उन्होंने कहा कि दक्षिण कोरिया के साथ हमारे बहुत मजबूत निवेश, व्यापार संबंध और रक्षा सहयोग हैं। हमारे लोगों के बीच भी बहुत मजबूत संबंध हैं। हमारे पास बड़ी संख्या में भारतीय नागरिक भी हैं, जो वहां रहते हैं। हम लगातार कड़ी नजर बनाए हुए हैं ताकि अगर कोई ऐसी घटना या कोई ऐसी चीज हो जिसका हमारे भारतीय नागरिकों की सुरक्षा और हमारे हितों पर असर पड़े तो हम उस पर नजर रख सकें। हमें उम्मीद है कि देश में स्थिति जल्द ही स्थिर हो जाएगी। पुतिन के साथ शिखर वार्ता भारत में होने की संभावना रूसी राष्ट्रपति पुतिन की अगले साल संभावित भारत यात्रा पर विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि रूस के साथ हमारी वार्षिक शिखर वार्ता की व्यवस्था है। पिछली वार्षिक शिखर वार्ता मास्को में हुई थी, जिसके लिए प्रधानमंत्री मास्को गए थे। अगली शिखर वार्ता अगले साल भारत में होने वाली है। इसकी तारीखें कूटनीतिक चैनलों के माध्यम से तय की जाएंगी। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रही हिंसा पर क्या बोलीं थी शेख हसीना? बांग्लादेश छोड़ने के बाद अपने पहले सार्वजनिक वक्तव्य में अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना ने हाल ही में अराजक स्थिति और हिंदुओं पर हमलों के लिए सरकार प्रमुख मुहम्मद यूनुस को जिम्मेदार ठहराया है। कहा कि यूनुस देश में नरसंहार के लिए जिम्मेदार हैं और वह अल्पसंख्यकों को सुरक्षा देने में विफल रहे हैं। न्यूयार्क में अवामी लीग समर्थकों द्वारा आयोजित कार्यक्रम को भारत से वर्चुअली संबोधित करते हुए हसीना ने कहा कि पांच अगस्त को उनकी और उनकी बहन शेख रेहाना की हत्या की साजिश थी, जैसे कि 1975 में उनके पिता शेख मुजीब-उर-रहमान को मारा गया था। कहा, यूनुस सत्ता के भूखे हैं, इसीलिए वह पूजास्थलों को हमलों से बचा नहीं पा रहे हैं। बीते तीन महीनों में वह सरकार चला पाने में पूरी तरह से विफल साबित हुए हैं। मेरे स्पीच गांधीवादी सिद्धांत पर आधारित थे, दिल्ली हाई कोर्ट में उमर खालिद बोला- मेरे खिलाफ हिंसा का कोई आरोप नहीं पांच अगस्त के घटनाक्रम के बारे में हसीना ने बताया कि उन्होंने सेना को गोली न चलाने का स्पष्ट निर्देश दिया था जिससे कि नौजवान मारे न जाएं। उस स्थिति में सेना ने उन्हें देश छोड़कर जाने की सलाह दी। यह एक तरह से उन्हें देश छोड़ने के लिए मजबूर करना था। बीते महीनों में हसीना ने कई बयान जारी किए हैं लेकिन उनकी बोलते किसी ने नहीं देखा था। बुधवार को वह बोलते हुए दिखाई दीं। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार की आवाज दुनियाभर में उठ रहीं बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों पर हमलों के विरोध में अब विश्व भर में आवाज उठ रही हैं। अमेरिका में सांसद ब्रैड शरमन ने कहा है कि बांग्लादेश सरकार की पूरी जिम्मेदारी है कि वह देश में रहने वाले हिंदू समुदाय के लोगों की सुरक्षा करे। शरमन ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद के प्रमुख वाल्कर तुर्क से भी मांग की कि बांग्लादेश में हिंदू, बौद्ध और ईसाई समुदाय के लोगों पर हुए हमलों की जांच कराई जाए। ये हमले अगस्त में शेख हसीना की सरकार को हटाने के लिए देश भर में हुई हिंसा के दौरान हुए थे। इससे पहले अमेरिका में रहने वाले बांग्लादेशी मूल के हिंदुओं ने व्हाइट हाउस के समक्ष प्रदर्शन कर बांग्लादेश में हिंदुओं की सुरक्षा और धर्मगुरु चिन्मय दास की रिहाई की मांग की थी। ब्रिटिश सांसद प्रीति पटेल ने क्या कहा? ब्रिटिश सांसद प्रीति पटेल ने भी बांग्लादेश में हिंदू समुदाय के लोगों पर हमलों की कड़ी निंदा की है। उन्होंने इन हमलों को संवेदनहीन और भयभीत करने वाला बताया है। विपक्षी कंजरवेटिव पार्टी में विदेश मामलों की प्रभारी पटेल ने बांग्लादेश सरकार से अनुरोध किया है कि वह हिंदुओं के धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार की रक्षा करे। कंजरवेटिव पार्टी के सांसद बाब ब्लैकमैन ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं के सफाये की मुहिम चल रही है। इसे तत्काल रोका जाना चाहिए। जबकि सत्तारूढ़ लेबर पार्टी के सांसद बेरी गार्डिनर बांग्लादेश की स्थिति और हिंदुओं पर हमलों पर चर्चा के लिए संसद का आपात सत्र बुलाने की मांग की है।

संपादकीय

ट्रेन में सीट को लेकर हुई बहस ने ली एक की जान, दो घायल; पुलिस ने 4 आरोपियों को किया गिरफ्तार

उत्तर प्रदेश से एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। गुरुवार को वाराणसी जाने वाली ट्रेन में सीट बंटवारे को लेकर हुए विवाद के बाद चार लोगों ने कथित तौर पर 23 वर्षीय एक व्यक्ति पर धारदार हथियार से हमला कर उसकी हत्या कर दी। पीड़ित तौहीद अहमद की अस्पताल ले जाते समय मौत हो गई। घटना में तौहीद के दो भाई 20 वर्षीय तालिब अहमद और 34 वर्षीय तौसीफ भी घायल हो गए हैं। 4 आरोपियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार रेलवे पुलिस ने चार आरोपियों पवन कुमार, सुजीत कुमार, दीपक और मिथुन को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की उम्र 20 साल बताई जा रही है और वे सुल्तानपुर जिले के निवासी हैं। तालिब को गंभीर चोट आई है, जिन्हें इलाज के लिए लखनऊ रेफर कर दिया गया। डॉक्टरों ने बताया कि उनकी हालत स्थिर है। राजकीय रेलवे पुलिस (लखनऊ) के पुलिस अधीक्षक प्रशांत वर्मा ने कहा, गिरफ्तार किए गए चारों लोगों से पूछताछ की जा रही है। अमेठी का रहने वाला तौहीद अंबाला से घर लौट रहा था, जहां वह मजदूरी करता था। वह अपने घर जाने के लिए लखनऊ से बेगमपुरा एक्सप्रेस में सवार हुआ था। आरोपी भी मजदूर हैं और अंबाला से लौट रहे थे। चीखें न निकले, न खून बहे, बेटे ने शातिर तरीके से की पूरे परिवार की हत्या, घूमकर लौटा औरङ्क डरा रही कत्ल की कहानी पुलिस के अनुसार बेगमपुरा एक्सप्रेस में सीट शेयर करने का जिक्र करने के बाद तौहीद की आरोपियों के साथ तीखी बहस हुई। विवाद बढ़ गया और चारों लोगों ने कथित तौर पर उस पर हमला कर दिया और उसकी पिटाई कर दी। बाद में तौहीद ने अपने भाइयों को बताया, जो अपने साथियों के साथ निहालगढ़ रेलवे स्टेशन पहुंचे। हैदरगढ़ में हुई घटना चूंकि ट्रेन अमेठी में नहीं रुकती है, इसलिए यात्री आमतौर पर अमेठी से लगभग 45 किलोमीटर दूर सुल्तानपुर जिले में स्थित निहालगढ़ रेलवे स्टेशन पर उतरते हैं। मृतक के भाई तौसीफ ने कहा, जब ट्रेन हैदरगढ़ क्षेत्र में पहुंची, तो मुझे तौहीद का फोन आया। उसने मुझे बताया कि ट्रेन में कुछ लोगों से उसकी बहस हो गई थी और उसने मुझे आने के लिए कहा तौसीफ ने मीडियाकर्मियों से बात करते हुए कहा, हम निहालगढ़ पहुंचे और जब ट्रेन रुकी तो हम उसमें चढ़ गए। मैंने देखा कि मेरे भाई की पीठ पर चाकू से दो बार वार किया गया था। इससे पहले कि मैं प्रतिक्रिया दे पाता, किसी ने मुझ पर रॉड से हमला कर दिया। हालांकि, राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) ने कहा कि तौहीद के भाइयों और आरोपियों के बीच झड़प निहालगढ़ रेलवे स्टेशन के एक कोने पर हुई है। जीआरपी स्टेशन हाउस ऑफिसर (सुल्तानपुर) अरविंद कुमार पांडे ने कहा, आरोपी ट्रेन से उतर गए और निहालगढ़ रेलवे स्टेशन पर तौहीद के भाइयों के साथ झड़प हुई। इस दौरान तौहीद को चाकू मार दिया गया। मारपीट की जानकारी होने पर जीआरपी और रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) की टीम मौके पर पहुंची और घायलों को इलाज के लिए अस्पताल ले गई। इस बीच चारों आरोपी ट्रेन में सवार हो गए, जो फिर निहालगढ़ स्टेशन से रवाना हो गई। पीड़ितों में से एक तौहीद की मौत हो जाने के बाद पुलिस ने तुरंत सुल्तानपुर में अपनी टीम को बताया।

आस्था...

अगर आपकी हथेली पर है ये निशान तो आप हैं बेहद भाग्यशाली...

हस्तरेखा ज्योतिष के जरिए हम हथेली की रेखाओं और निशानों के आधार पर किसी व्यक्ति के भविष्य, व्यक्तित्व और करियर के बारे में जान सकते हैं। हथेली की रेखाओं के अलावा त्रिभुज, चक्र और शंख जैसी आकृतियां भी होती हैं, जो व्यक्ति की विशेषताओं को बताती हैं। ऐसे में आज हम त्रिभुज के निशान के बारे में बात करेंगे। हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार, हथेली पर बने त्रिभुज निशान व्यक्ति के स्वभाव और जीवन से जुड़े कई रहस्यों को खोलती है। आइए जानते हैं हथेली पर बने त्रिभुज से जुड़े संकेत। हथेली पर बड़ा त्रिभुज का निशान होना हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार, अगर किसी की हथेली में बड़ा त्रिभुज बनता है तो इसका मतलब है कि उस व्यक्ति का दिल बहुत बड़ा है यानि कि ऐसे लोग दिलवाले माने जाते हैं। ऐसे लोग हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहते हैं और बदले में इनसे किसी तरह की उम्मीद भी नहीं रखते। ये दिल से सच्चे और नरम के स्वभाव के होते हैं। चंद्र रेखा के ऊपर त्रिभुज का निशान हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार, अगर किसी की हथेली पर चंद्र रेखा के ऊपर त्रिभुज का निशान है, तो यह बताता है कि ऐसे लोग अक्सर सरकारी खर्चे पर या अपनी कंपनी की तरफ से विदेश यात्रा करते हैं। ऐसे लोग दिमाग के भी काफी तेज माने जाते हैं। ये अपने दिमाग का इस्तेमाल करके जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। शुक्र पर्वत पर त्रिभुज का निशान अगर किसी की हथेली में शुक्र पर्वत पर त्रिभुज का निशान हो तो ये लोग रंगीन स्वभाव के माने जाते हैं। इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है और ये शान-शौकत से जीने वाले होते हैं। इनका रहन-सहन भी ऊंचा होता है और ये हमेशा अच्छे कपड़े, खानपान और सुविधाओं का आनंद लेते हैं। गुरु बृहस्पति को इन 4 राशियों के लोग होते हैं सबसे प्रिय, देते हैं बेशुमार धन-दौलत का आशीर्वाद आयु रेखा पर त्रिभुज का निशान हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार, अगर किसी के हाथ में आयु रेखा पर त्रिभुज का निशान होता है, तो इसका मतलब है कि उनकी उम्र लंबी होगी। ऐसे लोग अपने जीवन में लंबी उम्र प्राप्त करते हैं और अपने सारे लक्ष्य भी पूरा करते हैं। उनका पारिवारिक जीवन भी सुखमय और सफल होता है। मस्तिष्क रेखा पर त्रिभुज का निशान अगर किसी जातक के मस्तिष्क रेखा पर त्रिभुज का निशान है।

आज का राशिफल

मेष: चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

मेष: कुदरत ने आपको आत्मविश्वास और तेज दिमाग से नवाजा है- इसलिए इनका भरपूर इस्तेमाल कीजिए। आज किसी विपरीत लिंगी की मदद से आपको करोबार या नौकरी में आर्थिक लाभ होने की संभावना है। दूसरों के मामलों में दखल देने से आज बचें। आज आप अपने प्रिय से अपने जज्बात का इजहार करने में मुश्किल महसूस करेंगे। आपका संगी आपसे सिर्फ कुछ समय चाहता है लेकिन आप उनको समय नहीं दे पाते जिससे वो खिन्न हो जाते हैं। आज उनकी यह खिन्नता स्पष्टता के साथ सामने आ सकती है।

वृषभ : उ, ई, ऐ, ओ, बा, बी, बे, बो।

वृषभ: आशावादी बनें और उजले पक्ष को देखें। आपका विश्वास और उम्मीद आपकी इच्छाओं व आशाओं के लिए नए दरवाजे खोलेंगी। जिन व्यापारियों के संबंध विदेशों से हैं उन्हें आज धन हानि होने की संभावना है इसलिए आज के दिन सोच समझकर चलें। घर में उल्लास का माहौल आपके तनावों को कम कर देगा। आप भी इसमें पूरी सहभागिता करें और महज मूक दर्शक न बने रहें। एक लम्बा दौर जो काफी समय से आपको दबोचे हुए था, खत्म हो चुका है- क्योंकि जल्दी ही आपको आपका जीवन-साथी मिलने वाला है। यात्रा के मौकों को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए।

मिथुन: क, की, कू, घ, ड, छ, के, को, हा।

मिथुन: पेचीदा हालात में फँसने पर घबराएँ नहीं। जैसे खाने में थोड़ा-सा तीखापन उसे और भी लजीज बना देता है, उसी तरह ऐसी परिस्थितियाँ आपको खुशियों की सही क ीमत बताती हैं। अपना मूड बदलने के लिए किसी सामाजिक आयोजन में शिरकत करें। आज के दिन आपको आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता अहि- मुमकिन है कि आप जरूरत से ज्यादा खर्च करें या आपका बटुआ खो भी सकता है- ऐसे मामलों में सावधानी की कमी आपको नुकसान पहुँचा सकती है। उन लोगों के साथ कुछ समय बिताएँ, जो आपको चाहते हैं और आपका खयाल रखते हैं। आपकी प्रेम कहानी आज एक नया मोड़ ले सकती है।

कर्क : ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो।

कर्क: आज का दिन मौज-मस्ती और आनन्द से भरा रहेगा- क्योंकि आप जिन्दगी को पूरी तरह जिएंगे। अतिरिक्त आय के लिए अपने सृजनात्मक विचारों का सहारा लें। घरेलू मामलों पर तुरंत ध्यान देने की जरूरत है। किसीकी दखलअंदाजी के चलते आपके और आपके प्रिय के रिश्ते में दूरियाँ आ सकती हैं। आज किसी सहकर्मी के साथ आप शाम का वक्त बिता सकते हैं हालांकि अंत में आपको महसूस होगा कि आपने उनके साथ समय बर्बाद किया है और कुछ नहीं। वैवाहिक जीवन में आप कुछ निजता की जरूरत महसूस करेंगे।

सिंह: मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे।

सिंह: शारीरिक बीमारी के सही होनी की काफी संभावनाएँ हैं और इसके चलते आप शीघ्र ही खेल-कूद में हिस्सा ले सकते हैं। जो लोग टैक्स चोरी करते हैं आज वो बड़ी मुसीबत में फंस सकते हैं। इसलिए आपको यही सलाह दी जाती है कि टैक्स की चोरी न करें। शाम के समय अपने जीवनसाथी के साथ बाहर खाना या फिल्म देखना आपको सुकून देगा और खुशमिजाज बनाए रखेगा। आपका प्रेमी या प्रेमिका आज बहुत गुस्से में नजर आ सकते हैं इसकी वजह उनके घर की स्थिति होगी। अगर वो गुस्से में हैं तो उन्हें शांत करने की कोशिश करें।

कन्या: टो, पा, पी,पू, ष, ण, ठ, पे, पो।

कन्या: गाड़ी चलाते समय सावधान रहें। अगर आप अपनी रचनात्मक प्रतिभा को सही तरीके से इस्तेमाल करें तो वह काफी फायदेमंद साबित होगी। अपने सामाजिक जीवन को दरकिनार न करें। अपनी व्यस्त दिनचर्या में से थोड़ा-सा समय निकालकर अपने परिवार के साथ किसी आयोजन में शिरकत करें। यह न सिर्फ आपका दबाव कम करेगा, बल्कि आपकी झिझक भी मिटा देगा। प्यार के नजरिए से यह दिन बेहद खास रहेगा। आज आपको रिश्तों की अहमियत का अंदाज हो सकता है क्योंकि आज के दिन का ज्यादातर समय आप अपने परिवार के लोगों के साथ बिताएंगे।

तुला: रा, री, रू, रे, ता, ती, तू, ते।

तुला: उम्रदराज लोगों को अपनी सेहत का ध्यान रखने की जरूरत है। विदेशों में पड़ी आपकी जमीन आज अच्छे दामों में बिक सकती है जिससे आपको मुनाफा होगा। अपने जीवन-साथी के साथ बेहतर समझ जिन्दगी में खुशी, सुकून और समृद्धि लाएगी। आपके प्रिय/जीवनसाथी का फोन आपका दिन बना देगा। कार्यक्षेत्र के किसी काम में खराबी की वजह से आज आप परेशान रह सकते हैं और इस बारे में सोचकर अपना कीमती वक्त बर्बाद कर सकते हैं। वैवाहिक सुख के दृष्टिकोण से आज आपको कुछ अनोखा उपहार मिल सकता है।

वृश्चिक: तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक: यह हँसी की चमक से उजला दिन है, जब ज्यादातर चीजें आपके मन के मुताबिक होंगी। जो उधारी के लिए आपके पास आएँ, उन्हें नजरअन्दाज करना ही बेहतर रहेगा। अनचाहे मेहमानों से शाम को आपका घर भरा रह सकता है। रोमांचक दिन है, क्योंकि आपके प्रिय का फोन आएगा। आज धार्मिक कामों में आप अपना खाली समय बिताने का विचार बना सकते हैं। इस दौरान बेवजह की बहसों में आपको नहीं पड़ना चाहिए। आपके आस-पास के लोग कुछ ऐसा कर सकते हैं, जिसके चलते आपका जीवनसाथी आपकी तरफ फिर से आकर्षित महसूस करेगा।

धनु : ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे।

धनु: उन भावनाओं को पहचानें, जो आपको प्रेरित करती हैं। डर, शंका और लालच जैसी नकारात्मक भावनाओं को छोड़ें, क्योंकि ये विचार उन चीजों को आकर्षित करते हैं, जो आप नहीं चाहते हैं। आज आप आसानी से पैसे इकट्ठा कर सकते हैं- लोगों को दिए पुराने कर्ज वापिस मिल सकते हैं- या फिर किसी नयी परियोजना पर लगाने के लिए धन अर्जित कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों की मदद करने के लिए अपने खाली समय का सदुपयोग करें। अगर अपने लव पार्टनर को अपना जीवनसाथी बनाना चाहते हैं तो उनसे आज बात कर सकते हैं।

मकर: भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी।

मकर: किसी दोस्त के साथ गलतफहमी अप्रिय हालात खड़े कर सकती है, किसी भी फैसले पर पहुँचने से पहले संतुलित नजरिए से दोनों पक्षों को जाँचें। अगर आप लम्बे वक़्त के लिए निवेश करें, तो अच्छा-खासा फायदा हासिल कर सकते हैं। ऐसा कोई जिसे आप जानते हैं, आर्थिक मामलों को जरूरत से ज्यादा गंभीरता से लेगा और घर में थोड़ा-बहुत तनाव भी पैदा होगा। आज अपने प्रिय को माफ करना न भूलें। आज किसी सहकर्मी के साथ आप शाम का वक्त बिता सकते हैं हालांकि अंत में आपको महसूस होगा कि आपने उनके साथ समय बर्बाद किया है और कुछ नहीं।

कुंभ: गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा।

कुंभ: आज के मनोरंजन में बाहर की गतिविधियों और खेल-कूद को शामिल किया जाना चाहिए। पैसे कमाने के नए मौके मुनाफा देंगे। आज काम तनावभरा और थकाऊ होगा, लेकिन दोस्तों का साथ आपको खुशमिजाज और जिंदादिल बनाए रखेगा। आपका प्रेमी या प्रेमिका आज बहुत गुस्से में नजर आ सकते हैं इसकी वजह उनके घर की स्थिति होगी। अगर वो गुस्से में हैं तो उन्हें शांत करने की कोशिश करें। इस राशि वाले जातकों को आज खाली वक्त में आध्यात्मिक पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। ऐसा करके आपकी कई परेशानियां दूर हो सकती हैं।

मीन: दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची।

मीन: दोस्तों का रुख सहयोगी रहेगा और वे आपको खुश रखेंगे। आप अच्छा पैसा बना सकते हैं, बशर्ते आप पारंपरिक तौर पर निवेश करें। अपने जीवन-साथी के साथ बेहतर समझ जिन्दगी में खुशी, सुकून और समृद्धि लाएगी। आपके प्रिय की खराब तबियत के चलते रोमांस को दरकिनार होना पड़ सकता है। इस राशि के जातक आज लोगों से मिलने से ज्यादा अकेले में वक्त बिताना पसंद करेंगे। आज आपका खाली समय घर की सफाई में बीत सकता है। आपके जीवनसाथी की मांगें तनाव का कारण बन सकती हैं। अगर आप किसी नए काम की शुरूआत कर रहे हैं तो आज का दिन आपके लिए अच्छा है।

आंखों में तनाव से होता है मसल्स स्ट्रेन

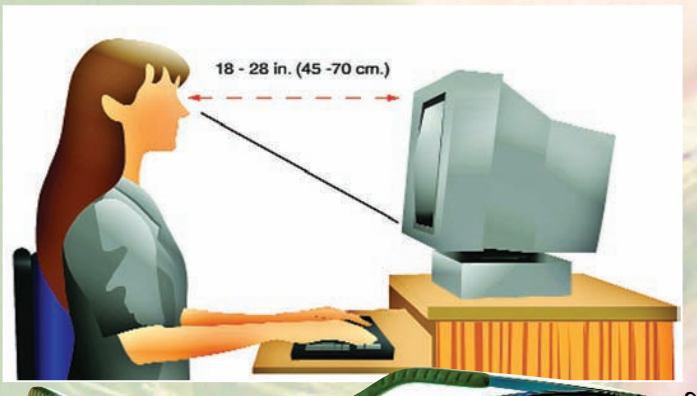

अगर आप कई घंटों तक लगातार कंप्यूटर पर काम कर रहे हैं। या ऑफिस में लगातार 10 से 12 घंटे बैठे हैं तो आप जरा संभल जाएं। आपको आई स्ट्रेन का खतरा हो सकता है।

आई स्ट्रेन यानी आंखों का तनाव एक आम समस्या है। कंप्यूटर या लैपटॉप पर लगातार काम करने और ज्यादा टीवी देखने के अलावा ऐसे कई और काम हैं, जिनके कारण यह समस्या आ सकती है। आई स्ट्रेन दरअसल आंखों को कंट्रोल करने वाली मसल्स का स्ट्रेन होता है। जिन एक्टिविटीज में लंबे समय तक एक ही चीज पर आंखों को फोकस करना होता है, उनमें स्ट्रेन हो सकता है।

बीमारी के प्रमुख लक्षण

- कंप्यूटर का इस्तेमाल।
- टीवी या मोबाइल की स्क्रीन लगातार देखना।
- ज्यादा चमकदार चीजों को देखना।
- सही नंबर का चश्मा न पहनना।
- स्ट्रेस।
- थकान।
- अल्कोहल या ड्रग्स का इस्तेमाल।
- आंखों में दर्द।
- सिर में दर्द या माइग्रेन।
- नजर कमजोर होते जाना और चश्मे के नंबर में बार-बार बदलाव।
- एक की दो चीजें नजर आना।
- आंखों में सूखापन।

बीमारी से कैसे करें बचाव

अगर कंप्यूटर पर काम कर रहे हैं या टीवी देख रहे हैं, तो काम के साथ-साथ ट्वंटी-ट्वंटी भी खेलते रहें।

इसके लिए करीब 20 मिनट तक लगातार स्क्रीन पर फोकस करने के बाद 20 सेकंड के लिए नजर वहां से हटाएं और अपने से 20 फुट की दूरी पर स्थित किसी चीज पर फोकस करें। इसके अलावा काम के दौरान हर घंटे आंखों को पांच मिनट के लिए आराम दें। हर दो घंटे के बाद सीट से उठ जाएं और कुछ चलने-फिरने का काम निबटा लें।

अगर आप बच्चों को डिब्बाबंद नाश्ता दे रहे हैं तो ठहर जाइए, जंकफूड से बच्चों की बुद्धि क्षमता कम होती है।

आंखों के लिए ये हैं बेहतर टिप्स

- अगर आंखें पास की चीजों पर फोकस करती हैं, तो उन्हें ज्यादा काम करना पड़ता है। ऐसे में बीच-बीच में दूर की चीजों पर नजर फोकस करना जरूरी है।
- कंप्यूटर फ्लैट स्क्रीन वाला हो, तो बेहतर है। उनसे आंखों को कम नुकसान पहुंचता है।
- हो सके तो कंप्यूटर स्क्रीन पर एंटीग्लेयर फिल्टर का इस्तेमाल करें।
- कंप्यूटर की स्क्रीन उस तरफ करके न रखें, जहां से रोशनी का रिफ्लेक्शन स्क्रीन पर पड़ता हो।
- मॉनिटर के ऊपर जमी धूल को रोजाना साफ करें।
- कंप्यूटर पर काम करते वक्त रोशनी की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए।
- कंप्यूटर या लैपटॉप की स्क्रीन आपकी आंखों से भरपूर दूरी पर होनी चाहिए। यह दूरी 20 इंच के करीब रख सकते हैं।
- नॉन-रिफ्लेक्टिव इंटरफेस का इस्तेमाल ज्यादा से ज्यादा करें। नॉन-रिफ्लेक्टिव इंटरफेस का मतलब है ऐसी सतह, जिससे कम-से-कम चमक आंखों पर पड़ती हो।
- अगर कुछ आप पेपर या मैगजीन से पढ़ सकते हैं, तो उसे ऑनलाइन पढ़ने की कोशिश न करें। पेपर पर पढ़ने से स्क्रीन पर पढ़ने के मुकाबले आंखों की मसल्स को कम मेहनत करनी पड़ती है।
- मोबाइल की स्क्रीन के रिफ्लेक्शन को कम करके रखें, जिससे आंखों पर कम चमक पड़े।
- जिस जगह टीवी देख रहे हैं, वहां रोशनी की भरपूर व्यवस्था होना चाहिए।
- लेटकर टीवी कभी न देखें। इससे आंखों का एंगल अलग-अलग हो जाता है, जिससे दिक्कत होती है।
- स्क्रीन पर लगातार काम करने वाले लोगों को अपनी नजर रेग्युलर चेक कराते रहना चाहिए।
- चश्मे का अगर कम-से-कम नंबर भी है तो उसे जरूर लगाएं। 0.25 नंबर है, तो भी उसे जरूर लगाना चाहिए।
- अगर पहले से चश्मे का इस्तेमाल करते हैं, तो भी यह चेक कराते रहें कि चश्मे का नंबर बढ़ तो नहीं गया है। गलत नंबर का चश्मा लगाना सिर और आंखों में दर्द होने की वजह हो सकता है, इसलिए आंखों के नंबर को नजरअंदाज न करें।

आईक्यू को कम करता है जंकफूड

ब्रिटेन में 4000 बच्चों पर हुए एक शोध में पाया गया कि चार वर्ष से कम उम्र के वे बच्चे जो परिष्कृत खाद्य पदार्थ, वसा और शर्करा का सेवन करते हैं, उनके मस्तिष्क की क्षमता साढ़े आठ वर्ष की उम्र में पहुंचने पर कम हो गई।

- **सोचने की क्षमता अवरुद्ध** : बच्चों की आईक्यू में 1.67 की दर से गिरावट उनके द्वारा सेवन किए गए परिष्कृत वसा को आईक्यू चार्ट को प्रतिबिंबित करेगा। इस क्षति की भरपाई नहीं की जा सकती, मसलन चार और सात वर्ष की आयु के बच्चों का खानपान उनके आईक्यू के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं डालेगा।
- **खानपान पर निगरानी** : ब्रिटेन के ब्रिस्टल विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा कई वर्षों में किए गए अध्ययन में तीन, चार, सात और साढ़े आठ वर्ष के बच्चों के खानपान पर निगरानी रखी गई। शोध की अगुवाई करने वाली ब्रिस्टल विश्वविद्यालय की डाक्टर केट नार्थस्टोन ने बताया कि ब्रिटिश बच्चों की खानपान की आदत काफी खराब है, ये बाल्यावस्था में अधिक मात्रा में परिष्कृत, वसायुक्त और शर्करायुक्त खाद्य पदार्थों का सेवन करते हैं जो कि साढ़े आठ वर्ष की आयु में कम आईक्यू का कारण हो सकता है। पुष्ट आहार अच्छे आईक्यू का कारण हो सकता है। इस बात की संभावना है कि बाल्यावस्था में अच्छा खान पान दिमाग के विकास में सहायक होता है।

बाजरे से पाएं भरपूर कैल्शियम

अगर आपके शरीर में कैल्शियम की कमी और इसे तत्काल दूर करना चाहते हैं, तो आप बाजरा से बनी हुई चीजें प्रयोग कर सकते हैं।

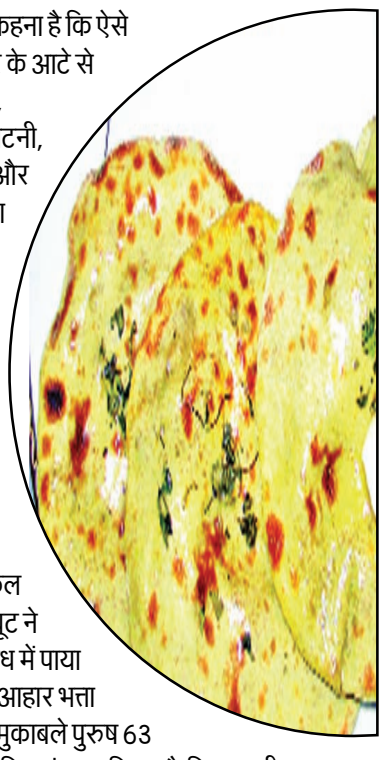

वैज्ञानिकों का कहना है कि ऐसे लोगों को बाजरे के आटे से बना हुआ डोसा, सोयाबीन की चटनी, तिल के लड्डू और रसगुल्ला खाना चाहिए। यह शरीर में कैल्शियम की कमी पूरी करता है। पुणे विश्वविद्यालय और हीराबाई कोवासजी जहांगीर मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट ने एक संयुक्त शोध में पाया कि अनुसंशित आहार भत्ता (आरडीए) के मुकाबले पुरुष 63 प्रतिशत और महिलाएं 53 प्रतिशत कैल्शियम ही लेती हैं।

कैल्शियम की कितनी जरूरत

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा विकसित आरडीए के अनुसार, सात से नौ साल के बच्चों को रोजाना 600 मिलीग्राम कैल्शियम की जरूरत होती है जबकि 10 से 19 साल के बच्चों को 800 मिलीग्राम। देश में सात से 19 साल उम्र वर्ग के 236 बच्चों के खाद्य आदतों पर किए गए नए सर्वे के मुताबिक, 90 प्रतिशत बच्चों के भेजन में कैल्शियम की मात्रा कम थी। इनमें 45 प्रतिशत कम मात्रा में दूध लेते थे जबकि 36 प्रतिशत दूध लेते ही नहीं थे। इस शोध के बाद अनुसंधानकर्ताओं ने बगैर दूध के 14 ऐसे खाद्य तैयार किए हैं जिनमें कैल्शियम की उचित मात्रा है। 'करेंट साइंस' में प्रकाशित शोध परिणाम के अनुसार, इन उत्पादों में बाजरे के आटे का डोसा, तिल के लड्डू, तिल और सोयाबीन की चटनी, पोस्तादान का दलिया, हलीम के बीज और तिल की चिक्की शामिल है। इससे आपको कैल्शियम भरपूर मिलेगा।

गंभीर बीमारी का संकेत पीली पलकें

अगर आपकी पलकें पीली हो रही हैं तो आप तत्काल डॉक्टर को दिखाएं।

जी हां, अगर आप जानना चाहते हैं कि आपको दिल का दौरा पड़ने का खतरा तो नहीं है, तो बस अपनी पलकों पर नजर रखिए। एक नए अध्ययन में कहा गया है कि आंखों की आस-पास की त्वचा पर पीलापन दिल की बीमारी के लक्षण हो सकता है।

धब्बे होने पर खतरा

'ब्रिटिश मेडिकल जर्नल' की खबर के अनुसार, डेनमार्क में शोधकर्ताओं ने करीब 13 हजार लोगों पर एक अध्ययन किया और पाया कि 'जैनथेलास्माटा' नाम से पहचाने जाने वाले धब्बे होने पर 10 साल के अंदर दिल का दौरा पड़ने या मौत होने की संभावना ज्यादा होती है।

हो जाता है कोलेस्ट्रोल जमा

शोधकर्ताओं ने कहा कि कोलेस्ट्रोल के जमा होने पर धब्बे हो जाते हैं जो मुलायम और बिना दर्द वाले होते हैं। इन धब्बों का असर नजर पर नहीं पड़ता है और लोग अक्सर उनका इलाज त्वचा विशेषज्ञ से कराते हैं। डेनमार्क में हलर्वे अस्पताल के शोध दल ने 1970 के दशक से 12745 लोगों पर नजर रखना शुरू किया।

जैनथेलास्माटा के धब्बे

अध्ययन की शुरूआत के समय 4-4 प्रतिशत मरीजों में 'जैनथेलास्माटा' नाम के धब्बे थे। तैंतीस साल बाद 1872 लोगों को दिल का दौरा पड़ा, 3699 लोगों को दिल की बीमारी हुई और 8507 लोगों की मौत हो गई। आंकड़ों से साफ है कि जिनकी आंखों के आस-पास पीले निशान थे उन पर इसका खतरा ज्यादा था।

बढ़ जाती है आशंका

पीले निशान वाले 48 प्रतिशत लोगों में दिल के दौरे की आशंका ज्यादा थी। 39 प्रतिशत लोगों में दिल की बीमारी होने की आशंका ज्यादा थी और 14 प्रतिशत लोगों की अध्ययन के दौरान मौत हो गई। दिल के दौरे वाला संबंध महिलाओं के मुकाबले 70 से 79 साल के बीच वाले पुरुषों में ज्यादा पाया गया।

चॉकलेट खाओ कसरत भूल जाओ

चॉकलेट प्रेमियों के लिए खुशखबरी है। अध्ययन में कहा गया है कि चॉकलेट खाना कसरत करने जितना ही असरकारक होता है।

आप अगर साइकिलिंग और कसरत कर पसीना बहा रहे हैं तो एक आसान तरीका आपका इंतजार कर रहा है। बस चॉकलेट खाते रहिए। अमेरिका के वायन स्टेट विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने पाया कि डार्क चॉकलेट की हल्की मात्रा स्वास्थ्य के लिए कसरत जैसी ही लाभदायक हो सकती है।

माइटोकॉड्रिया का अध्ययन

डेली टेलीग्राफ की खबर में बताया गया कि अनुसंधानकर्ताओं ने कोशिकाओं के ऊर्जा केंद्र माइटोकॉड्रिया का अध्ययन किया। अनुसंधान में पाया गया कि चॉकलेट में पाया जाने वाला तत्व इपिकाटेचिन व्यायाम की तरह मांसपेशियों पर असर करता है।

चूहों पर परीक्षण

चूहों पर परीक्षण करने वाले डॉ. मोह मलेक ने बताया, माइटोकॉड्रिया ऊर्जा पैदा करता है जिसका इस्तेमाल कोशिकाएं करती हैं। ज्यादा माइटोकॉड्रिया का मतलब ज्यादा ऊर्जा जिससे ज्यादा काम किया जा सकता है। उन्होंने कहा, हमारे अध्ययन में पाया गया कि इपिकाटेचिन दिल और अन्य मांसपेशियों में माइटोकॉड्रिया की संख्या को बढ़ाते है, जैसे साइकिलिंग और दूसरी कसरतें बढ़ाती हैं।

कोकोआ मददगार

ब्रिटेन के हल विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने पाया है कि चाकलेट में पाए जाने वाले पोलीफिनोल तत्व में कोकोआ बेहद अधिक मात्रा में पाया जाता है जो मधुमेह रोग पीड़ितों में कोलेस्ट्रॉल के स्तर में कटौती कर सकता है। बहुत से मुधमेह पीड़ित उच्च कोलेस्ट्रॉल की विशेष समस्या से परेशान रहते हैं। पूर्व के अध्ययनों में पाया गया है कि कोकोआ में पाया जाने वाला यह तत्व दिल की बीमारियों के खतरे को भी कम कर सकता है। शोधकर्ताओं ने इस थ्योरी का परीक्षण किया कि कोकोआ फलियों में पाया जाने वाला रसायन कोलेस्ट्रॉल के प्रभाव को कम कर सकता है।

अनशनकारी महावीर मेघवाल की हालत बिगड़ी,आपातकालीन वाहन 108 से सीएचसी पीलीबंगा में किया गया भर्ती

शुक्रवार को अनशनकारी सुमेर सिंह मेघवाल की अचानक तबीयत हुई थी असामान्य और आज दुसरे अनशनकारी महावीर मेघवाल की भी तबीयत असामान्य फिर भी प्रशासन है मौन

- 4 सूत्रीय मांगों को लेकर पांचवे दिन भी आमरण अनशन बैठे है ग्रामीण

♦भारत टाइम्स♦

पीलीबंगा। मदनलाल पण्डितांवाली। 4 सूत्रीय मांगों को लेकर पीलीबंगा उपखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत पण्डितांवाली के चक 37 एनडीआर के ग्रामीणों का आमरण अनशन पांचवे दिन भी जारी रहा। आमरण अनशन पर बैठे महावीर मेघवाल की शनिवार को शाम 4 बजे के करीब अचानक तबीयत बिगड़ने लगी! आमरण अनशन पर बैठे ग्रामीणों द्वारा स्वास्थ्य अधिकारी पीलीबंगा डॉक्टर सुनील अग्रवाल को सूचना फोन के माध्यम से दी गई । वही डॉ. सुनील अग्रवाल ने अनशनकारियों को बताया कि वाहन सुविधा उपलब्ध नहीं है आप आपातकालीन 108 गाड़ी को फोन किजिए आप के पास तुरंत प्रभाव से वाहन व टीम पहुँच जाएगी। आमरण अनशन पर बैठे अनशनकारी सुमेर सिंह मेघवाल ने आपातकालीन सेवा वाहन को फोन किया तो आपातकालीन सेवा 108 वाहन सेवा आमरण अनशन स्थल पर पहुँच अनशनकारी महावीर मेघवाल का स्वास्थ्य परिक्षण किया गया तो अनशनकारी महावीर मेघवाल की शारीरिक स्थिति असामान्य पाए जाने पर उसे आपातकालीन सेवा वाहन के माध्यम से सीएचसी पीलीबंगा लाया गया व भर्ती किया गया। वही बता दे कि शुक्रवार को आमरण अनशन पर बैठे सुमेर सिंह मेघवाल व महावीर मेघवाल के स्वास्थ्य जांच की गई थी। जांच के दौरान अनशनकारी सुमेर सिंह मेघवाल का स्वास्थ्य शुक्रवार को असामान्य पाया गया था तब पीलीबंगा स्वास्थ्य अधिकारियों की टीम द्वारा अनशनकारी सुमेर सिंह मेघवाल को तुरंत प्रभाव से सीएससी पीलीबंगा भर्ती किया गया था। और आज आमरण अनशन पर बैठे अनशनकारी महावीर मेघवाल को भर्ती किया गया है लेकिन प्रशासन फिर भी मौन है।इस दौरान पंचायत के ग्रामीणों ने बड़ी संख्या में आमरण अनशन स्थल पर पहुंच समर्थन दिया। आमरण अनशन पर बैठे ग्रामीणों का कहना है की खाना पीना त्यागकर आमरण अनशन पर बैठे महावीर मेघवाल ,सुमेर सिंह मेघवाल से मिलने पांचवे दिन तक भी उपखंड अधिकारी व जिले का कोई अधिकारी ग्रामीणों की सुध लेने नहीं पहुंचे हैं।आमरण अनशन में बैठे लोगों की कोई सुध नहीं लिए जाने से आमरण अनशन स्थल पर चक 37 एनडीआर के ग्रामीणों में भारी आक्रोश है वही आमरण अनशन स्थल पर सुमेर सिंह मेघवाल, राजीव लोहारा, दीपू गांधी, विनोद मेघवाल, सोमाराम, सुभाष कुमार, कमला देवी, मीरा देवी सहित भारी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा स्वास्थ्य संस्थाओं का किया भ्रमण

♦भारत टाइम्स♦

रहीम शेरानी झाबुआ। कलेक्टर नेहा मीना के निदेर्शानुसार मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. बी एस बघेल द्वारा झाबुआ विकासखंड अंतर्गत, उप स्वास्थ्य केंद्र अमलीफलिया, उप स्वास्थ्य केंद्र टिकडीमोटी के अंतर्गत ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस भ्रमण किया गया। भ्रमण के दौरान राष्ट्रीय कार्यक्रमों की समीक्षा, 70+ आयुष्मान कार्ड की समीक्षा, एनीमिया मुक्त भारत, टीकाकरण कार्यक्रम का महत्व बताया तथा पाई गईं कमियों को दूर करने एवं संस्था पर साफ सफाई हेतु आवश्यक निर्देश दिए। भ्रमण के दौरान जिला कार्यक्रम प्रबंधक आर.आर.खन्ना, मौजूद रहे।

पतंग बाजी में इस्तेमाल किये जाने वाले चाइनीज धागे को कलेक्टर ने प्रतिबंधित किया

♦भारत टाइम्स♦

रहीम शेरानी झाबुआ। कलेक्टर नेहा मीना के आदेशानुसार चायनीज धागे को पतंगबाजी में इस्तेमाल किये जाने को प्रतिबंधित किया गया है। जनसामान्य द्वारा यह तथ्य ध्यान में लाया गया कि पतंगबाजी में उपयोग होने वाले चायना के धागे के उपयोग से पक्षियों व जनसामान्य को हानि पहुंच रही है। कई बार चायना के धागे से पतंग उड़ाते समय पक्षी इसमें उलझ कर फस जाते है. और घायल हो जाते है और कई बार तो पक्षियों की मृत्यु तक हो जाती है। इस धागे से पतंगबाजी के दौरान रोड़ पर चलने वाले राहगीर भी कई बार घायल हो जाते है। चायना धागे की मजबूती इन हादसों का कारण है व इस धागे का उपयोग पतंगबाजी में किये जाने से पशु-पक्षियों व जनसामान्य के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। निकट भविष्य में मकर संक्रान्ति पर्व आने वाला है तथा इस त्यौहार पर बड़ी संख्या में पतंगबाजी की जाती है। इस प्रकार चायना के धागे का पतंगबाजी में उपयोग की गतिविधियों पर रोकथाम की दृष्टि से इसके उपयोग को प्रतिबंधित किये जाने

की तत्काल आवश्यकता प्रतीत हो रही है। जिले की सीमा में चायना धागे का पतंगबाजी में उपयोग करने से कानून एवं व्यवस्था तथा स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव की स्थिति को रोकने व आमजन के जान-माल को आसन्न खतरा उत्पन्न होने की स्थिति को रोकने हेतु इस पर अंकुश लगाये जाने की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी जिला झाबुआ, नेहा मीना, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के अन्तर्गत जन सामान्य के हित/जानमाल एवं लोक शांति को बनाये रखने हेतु झाबुआ जिले की राजस्व सीमा में प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया जाता है। जिले की राजस्व सीमा क्षेत्र में चायना के धागे को पतंगबाजी में उपयोग करने को प्रतिबंधित किया जाता है। साथ ही इसका भंडारण तथा विक्रय भी प्रतिबंधित किया जाता है। चूंकि यह आदेश जन साधारण की सुविधा हेतु तत्काल पालन हेतु प्रभावशील किया जाना आवश्यक हो गया है। इतना समय उपलब्ध नहीं है, कि जन सामान्य व सभी संबंधित पक्षों को उक्त सूचना की तामिली की जा सकें। अतः यह आदेश भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 (2) के अंतर्गत एक पक्षीय पारित किया जाता है। आदेश से व्यथित व्यक्ति भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 (5) के अंतर्गत कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी न्यायालय में आवेदन प्रस्तुत कर सकेगा। अत्यंत विशेष परिस्थितियों में कलेक्टर संतुष्ट होने पर आवेदक को किसी भी लागू शर्तों से छूट दे सकेगा। उक्त आदेश 06 दिसम्बर 2024 से 31 जनवरी 2025 तक प्रभावशील रहेगा तथा उक्त प्रभावशील अवधि में आदेश का उल्लघंन धारा 223 भारतीय न्याय संहिता अंतर्गत दण्डनीय अपराध की श्रेणी में आयेगा।

सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का समापन

♦भारत टाइम्स♦

हरियाणा/ हिसार (गरिमा)। भागवत सेवा समिति बरवाला के तत्वावधान में अग्रवाल धर्मशाला बरवाला के प्रांगण में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का समापन हुआ ` समिति के सदस्य कृष्ण मित्तल ने बताया कि इस कथा ज्ञान यज्ञ में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व विधायक वेद नारंग, नगर पालिका चेयरमेन रमेश बैटरीवाला, पार्षद प्रतिनिधि सुनील शर्मा व पूर्व पार्षद प्रतिनिधि मोनू संदूजा ने शिरकत की और अध्यक्षता प्रबंधक महाबीर प्रसाद मित्तल तंबाकू वाले , डॉक्टर सुभाष चोपड़ा व मास्टर प्रदीप कथूरिया ने की तथा मंच संचालन अजीत मेहता ने किया` इस कथा ज्ञान यज्ञ के अंतिम दिन हिंदू रीति रिवाज के अनुसार पूरे मंत्रोच्चारण के साथ हवन यज्ञ किया गया और भंडारा चलाया गया` इस भंडारे में सैकड़ो श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया` इससे पूर्व वृंदावन से आए महाराज पंडित सुरेश चंद्र शास्त्री ने अपने प्रवचनों व भजनों के माध्यम से श्री सुदामा चरित्र व विश्राम व्यास पूजन का अपने मधुर कंठ से गुणगान किया` इन भजनों पर उपस्थित श्रद्धालुगण झूम उठे` इस दौरान भगवान श्री कृष्ण की झांकियां भी दिखाई गई इस अवसर पर कोषाध्यक्ष राकेश मित्तल, मदन लाल चावला, राजेश मित्तल, अशोक सरदाना, मोनू चोपड़ा, आशा चुघ, विकास मित्तल, दीपेश मित्तल, विकास चोपड़ा, सुरेश गोयल, पवन गर्ग, गर्वित सरदाना, मुकेश कथूरिया, पंकज कथूरिया, गगनदीप कथूरिया व प्रदीप गर्ग समेत सैकड़ो की तादाद में श्रद्धालुगण मौजूद रहे।

किसानों के साथ तानाशाही रवैया अपना रही सरकार- नरेश सेलवाल

किसानों को दवाई खाद बीज के लिए भटकना पड़ता है ओर सरकार सुध नहीं ले रही है: नरेश सेलवाल

♦भारत टाइम्स♦

हरियाणा/हिसार (गरिमा)। गांव छान में शहीद किसान रामेहर चाहर की याद में कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विधायक नरेश सेलवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में पहुंच कर प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। नरेश सेलवाल ने कहा कि भाजपा सरकार में किसान एमएसपी के लिए सड़कों पर प्रदर्शन कर रहा है लेकिन सरकार कोई बात सुनने के लिए तैयार नहीं है। किसानों को ना ही तो समय पर खाद मिलता और ना ही एमएसपी पर फसल खरीदी जाती। आज किसान आत्महत्या करने के लिए मजबूर है। जब कांग्रेस की सरकार थी चौधरी भूपेंद्र सिंह हुड्डा मुख्यमंत्री थे तब किसानों की हर बात की सुनवाई होती थी और किसानों को फसलों के अच्छे दाम मिलते थे। हरियाणा प्रदेश का हर

किसान खुशहाल था लेकिन आज भाजपा की सरकार में हरियाणा प्रदेश में किसान जगह जगह धरने पर बैठा है। कहीं फसल मुआवजा नहीं दिया जाता, कहीं फसल बीमा घोटाला, कहीं चावल घोटाला, कहीं धान घोटाला किया जाता है। किसानों को खाद के लिए लंबी लाइनों में लगना पड़ता है। किसानों को समय पर खाद नहीं मिलती। आज किसान भाजपा सरकार से पूरी तरह से परेशान है लेकिन सरकार किसानों की कोई सुध नहीं ले रही है। सरकार को किसानों की समस्याओं का समाधान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि शहीद किसान रामेहर की शहादत को हमेशा याद रखा जाएगा। इस अवसर पर उमेद सिंह चाहर, ओमप्रकाश श्योकंद, सतीश चाहर, दिलबाग फौजी, प्रेम, सतीश, राजवीर, कुलदीप, धर्मपाल, सुनील, चंद्र, कर्मराज बिट्टू, प्रधान बांदर लितानी, दिलदार पातड़ बिठमड़ा, मदन वर्मा बुढ़ाखेड़ा, सुनील सिहाग भैणी बादशाहपुर, हवासिंह नैन हसनगढ़, खुशीराम सुरेवाला,दर्शन सोढ़ी व अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कानपुर में गोली से छात्रा की मौत की वजह प्रेम प्रसंग से जुड़ी : हत्या की आशंका से जारी गहन जांच

- एक युवक से चल रहा था छात्रा का प्रेम प्रसंग जानकारी होने के बाद नाराज थे परिजन
- मौके से तमंचा – कारतूस भी बरामद

सुनील बाजपेई कानपुर। इस महानगर में प्रेम प्रसंग के चलते हत्याओं और आत्महत्या का दौर लगातार जारी है ,जिसके क्रम में एक और छात्रा की संदिग्ध हालातों में गोली लगने से मृत्यु हो गई। फोरेंसिक टीम और डॉग स्क्वायड ने भी मौके से सबूत जुटाए हैं। साथ ही पुलिस ने घर से तमंचा और कारतूस भी बरामद किया है। मामले में छात्रा के माना पिता और भाई के बयान में विरोधाभास होने की वजह से घटना की वजह प्रेम प्रसंग से भी जुड़ी मानी जा रही है। वहीं दूसरी ओर परिजनों ने घटना को आत्महत्या बताया है। 11वीं की इस छात्रा ने खुद अपने पेट पर फायर झोंका या किसी ने उसे गोली मारी, अभी पता नहीं चल पाया है। फिलहाल पुलिस मामले की गहराई से जांच पड़ताल में लगातार जुटी हुई है। यह घटना बिधनू के जामू गांव की है। यहां रहने वाले विनय सिंह चंदेल एक वकील के यहां मुंशी हैं। उनकी की बेटी श्रेया (16) की घर के अंदर ही संदिग्ध हालात में गोली लगने से मौत हो गई। इस बारे में पुलिस ने ग्रामीणों से भी बात की। जिसमें सामने आया कि छात्रा की गांव के ही एक युवक से दोस्ती थी। उनका लव अफेयर खुलकर सामने आया, तब लड़की के पिता ने लड़के के परिवार पर दबाव बनाया। उनके बीच झगड़ा भी हुआ। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक इसके बाद लड़के का परिवार औरैया शिफ्ट हो गया। करीब 4 महीने पहले परिवार फिर गांव लौटा था। इसके बाद दोनों परिवारों के बीच एक बार फिर तनाव बढ़ गया। गांव के लोगों ने बताया कि अब एक बार फिर लड़का और लड़की मिलने लगे थे। इसके बाद पुलिस ने लड़की के परिजनों से अलग-अलग बातचीत की। जिसमें लड़की की मां ने बताया कि घर के बाहर दुकान में गोली लगी है। पिता का कहना है कि घर के अंदर गोली चली। जबकि भाई बार-बार अपना बयान बदलता रहा। यही वजह है कि पुलिस घटना को संदिग्ध में पूरे मामले की गहराई से छानबीन कर रही है।

जमीन की रजिस्ट्री ना करवाने के मामले में एक व्यक्ति के विरुद्ध मामला दर्ज

रामा मंडी अशोक कुमार। जमीन की रजिस्ट्री ना करवाने के मामले में पुलिस ने एक व्यक्ति के विरुद्ध मामला दर्ज किया है। रजत गर्ग पुत्र विजय कुमार ने पुलिस को शिकायत थी कि उसने संजीव कुमार निवासी रामा मंडी से 87 लाख रुपए में 2 अप्रैल 2019 को दो एकड़ जमीन खरीदी थी जिसके 27 लाख रुपए उसने पहले ही दे दिए थे जबकि बाकी बची राशि रजिस्ट्री होने के बाद देनी थी लेकिन बाद में संजीव कुमार रजिस्ट्री करवाने में आनाकानी करता रहा और पांच साल का समय निकाल दिया इस तरह से संजीव कुमार ने उसके साथ धोखाधड़ी की है।जिसके बाद पुलिस ने जांच की और आरोपों को सही पाया।पुलिस ने आरोपी संजीव कुमार के खिलाफ धोखाधड़ी की धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है।

पिछड़ा आयोग के सदस्य सत्येन्द्र बारी ने लूलू माल लखनऊ के एमडी वसीम से मुलाकात की

♦भारत टाइम्स♦

लखनऊ। पिछड़ा आयोग के सदस्य सत्येन्द्र बारी ने शनिवार को लूलू माल लखनऊ के एमडी वसीम से मुलाकात की। इस अवसर पर पिछड़ा समाज के युवाओं को लूलू संस्था से जुड़े केंद्रों पर नौकरी की संभावनाओं पर विचार विमर्श हुआ। सत्येन्द्र बारी ने कहा कि लूलू प्राइवेट लिमिटेड में युवाओं के लिए रोजगार की संभावनाओं पर चर्चा हुई। इस अवसर पर एसआर यूनिवर्सिटी के डायरेक्टर कौशल, अमिगो इंडिया के फाउंडर अभिज्ञान, और राजस्व अधिकारी विवेक मित्तल उपस्थित रहे।

गर्भवती महिलाओं को रोटरी क्लब अपना ने मल्टीविटामिन की दवाई की खुराक दी

♦भारत टाइम्स♦

रहीम शेरानी झाबुआ। रोटरी क्लब अपना तत्वावधान में अध्यक्ष महेंद्र सिंह सोलंकी एवं रोटेरियन डॉ.किशोर नायक सी बीएमओ डॉ. विनोद नायक, डॉ वसीम शेख, के नेतृत्व में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मेघनगर एवं पडवाल हॉस्पिटल मेघनगर मे रोटरी क्लब अपना ने महिला स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया ! इस शिविर में गर्भवती महिलाओं को रोटेरियन राजनीश जायसवाल के सहयोग से निःशुल्क टॉनिक फेरिप्लेक्स, लाइजिन, सिग्नो कैल्शियम की दवाईया वितरण की गई। रोटरी क्लब अपना के डॉक्टर किशोर नायक ने उक्त जानकारी देते हुए बताया के यह दवाइयां गर्भवती महिलाओं के लिए बहुत ही फायदेमंद है यह तीन तरह की दवाइयां दी जा

रही है जिसमें फेरिप्लेक्स मिक्स्ड बेरी विटामिन बी कॉम्प्लेक्स सिरप एक प्राकृतिक और स्वस्थ पेय है जो प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने और ऊर्जा प्रदान करने में मदद करता है। दूसरी लाइज़िन सिरप विटामिन बी-कॉम्प्लेक्स, मिनरल्स और लाइसिन का मिश्रण है। लाइज़िन में बी-विटामिन में थायमिन, राइबोफ्लेविन, नियासिन/नियासिनमाइड, विटामिन बी6, विटामिन बी12, फोलिक एसिड और पैंटोथेनिक एसिड शामिल हैं। लाइज़िन सिरप में मौजूद विटामिन और मिनरल्स प्रतिरक्षा कार्यों को बढ़ाते हैं महीलाओं के शारीरिक विकास के लिए सहायता प्रदान करते हैं। लाइज़िन संक्रमणों के प्रति शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को भी बेहतर बनाता है। तैयारी में मौजूद एल-लाइसिन भूख बढ़ाता है और विकास में सहायता करता है। लाइज़िन सिरप को विटामिन की कमी के विकार के लिए एक रोगनिरोधी और/या चिकित्सा के रूप में संकेत दिया जाता है गर्भावस्था, पुरानी बीमारी और अनुशासनहीन जीवनशैली में आम है। मांसपेशियों को संचालित करता है !रोटरी क्लब अपना के अध्यक्ष महेन्द्र सिंह सोलंकी ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मेघनगर एवं पडवाल हॉस्पिटल में 80 गर्भवती महिलाओं की जांच के बाद दवाईयां वितरित की गई रोटरी क्लब अपना के रोटेरियन भारत मिस्त्री ने जानकारी देते हुए बताया कि यह गर्भवती माता के लिए दवाई हमारे रोटेरियन साथी रजनीश जायसवाल के माध्यम से हमें प्राप्त हुई है और अभी हमने एक माह की खुराक दी है और बाद में भी और दवाई रोटरी क्लब के माध्यम से दी जाएगी इस अवसर पर रोटेरियन साथी हॉस्पिटल का स्टाफ उपस्थित था।

सीएम योगी ने श्रद्धालुओं के लिए महाकुंभ क्षेत्र में किया 25,000 बेड के सार्वजनिक आश्रय स्थल की शुरूआत

♦भारत टाइम्स♦

प्रयागराज। महाकुंभ 2025 को दिव्य और भव्य बनाने के उद्देश्य से योगी सरकार तीर्थयात्रियों की सुविधाओं को प्राथमिकता देते हुए हरसंभव प्रयास कर रही है। योगी सरकार सर्दी के कठोर मौसम में श्रद्धालुओं के ठहराव और उनकी सुरक्षा के लिए का पूरा ध्यान रख रही है। इसी के मद्देनजर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को मेला क्षेत्र में 250 बेड की क्षमता वाले 100 सार्वजनिक आश्रय स्थलों का उद्घाटन किया। इसके साथ ही, इसके साथ ही, महाकुंभ मेला क्षेत्र में कंप्यूटरीकृत खोया-पाया केंद्र की भी शुरूआत की गई।

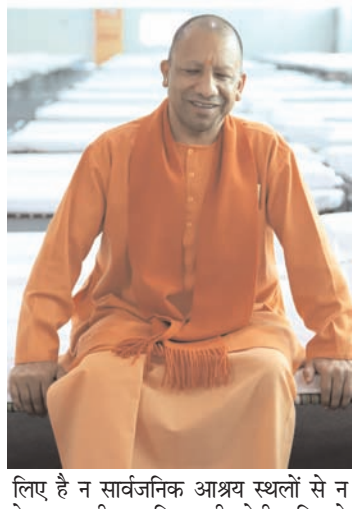

सीएम योगी ने कहा कि महाकुंभ जैसे भव्य आयोजन के दौरान तीर्थयात्रियों और आगंतुकों की भारी संख्या को देखते हुए सार्वजनिक आश्रय स्थलों की आवश्यकता महत्वपूर्ण होती है। परंपरागत रूप से तीर्थयात्री और साधु-संत खुले स्थानों या परिसंचरण क्षेत्रों में समय बिताते हैं, जिससे सर्द मौसम में उनके लिए कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए, सरकार ने 25,000 बेड की कुल क्षमता वाले सार्वजनिक आश्रय स्थलों की व्यवस्था की है। इन आश्रय स्थलों का उद्देश्य तीर्थयात्रियों को न केवल आरामदायक और सुरक्षित ठहराव प्रदान करना है, बल्कि उनकी यात्रा को सुलभ और सुविधाजनक भी बनाना है।

श्रद्धालुओं के लिए बेहद सस्ता और सुलभ होगा सार्वजनिक आश्रय स्थल- सार्वजनिक आश्रय स्थलों के उपयोग के लिए शुल्क की व्यवस्था सरल और सुलभ रखी गई है। सामान्य दिनों में, श्रद्धालुओं को पहले दिन के लिए 100 रुपये और दो दिन रुकने पर पहले दिन 100 रुपये और दूसरे दिन 200 रुपये का भुगतान करना होगा। मुख्य स्नान पर्व और उसके आसपास के दिनों में, यह शुल्क पहले दिन के लिए 200 रुपये और दो दिन के ठहराव के लिए पहले दिन 200 रुपये और दूसरे दिन 400 रुपये होगा। श्रद्धालु नकद या डिजिटल माध्यम (UPI) से भुगतान कर सकते हैं, जिसके बाद उन्हें टिकट जारी किया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि यह पहल विशेष रूप से उन तीर्थयात्रियों के लिए है न सार्वजनिक आश्रय स्थलों से न केवल उनकी यात्रा किफायती बनेगी, बल्कि वे सर्द मौसम में आराम और सुरक्षा का अनुभव भी कर सकेंगे।

सीएम योगी ने महाकुंभ मेला क्षेत्र में कंप्यूटरीकृत खोया-पाया केंद्र का किया उद्घाटन- मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाकुंभ 2025 की तैयारियों के तहत प्रयागराज मेला क्षेत्र में कंप्यूटरीकृत खोया-पाया केंद्र का उद्घाटन किया। यह केंद्र अत्याधुनिक तकनीकों से लैस होगा, जिससे श्रद्धालुओं की गुमशुदगी संबंधी समस्याओं का तुरंत समाधान किया जा सके। इस पहल से तीर्थयात्रियों को सुरक्षित और संगठित अनुभव मिलेगा।

आधुनिक सुविधाओं से लैस हैं सभी आश्रय स्थल

महाकुंभ के लिए तैयार किए गए सार्वजनिक आश्रय स्थलों को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस किया गया है। इनमें प्रत्येक आश्रय स्थल पर 250 बेड की क्षमता होगी। बेड के साथ गद्दे, तकिए और साफ चादरें उपलब्ध कराई जाएंगी। पुरुष और महिलाओं के लिए अलग-अलग शौचालय और स्नानघर की व्यवस्था की गई है। इन आश्रय स्थलों में नियमित सफाई, जिसमें चादरों का परिवर्तन शामिल है, सुनिश्चित की गई है। इसके अलावा, स्वच्छ पेयजल और चौबीस घंटे (24७7) सुरक्षा के प्रबंध किए गए हैं। इन सुविधाओं का उपयोग श्रद्धालु नाममात्र शुल्क पर कर सकेंगे, जिससे महाकुंभ में सभी वर्गों के लोगों को ठहरने का विकल्प मिलेगा।

लखनपुर सरगुजा- सुरेन्द्र साहू को इंडिया डायमंड डिग्निटी अवार्ड से सम्मानित किया गया

♦भारत टाइम्स♦

लखनपुर सरगुजा/इमरान अंसारी। छत्तीसगढ़ शबरी सेवा संस्थान के प्रदेश सचिव सुरेन्द्र साहू को जयपुर राजस्थान के भव्या फाऊडेसन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री सम्मेलन में इंडिया डायमंड डिग्निटी आवार्ड से सम्मानित किया गया है।छत्तीसगढ़ शबरी सेवा संस्थान के प्रदेश सचिव सुरेन्द्र साहू लगातार 32 वर्षों से बाल अधिकार , महिला अधिकार, नशा मुक्ति के खिलाफ जन जागरूकता अभियान,मानव व्यापार के खिलाफ जन-जागरूकता अभियान ,कोरोना काल में एंम्बुलेस का संचालन,घरेलू हिंसा के खिलाफ जन जागरूकता अभियान,बाल विवाह के खिलाफ जागरूकता अभियान टीबी खखार जांच केन्द्र का संचालन,जल जीवन मिसन मे जागरूकता अभियान एवं लाकडाऊन में लगातार किये गये उत्कृष्ट कार्य किये है उल्लेखनीय है कि सुरेन्द्र साहू समाज सेवी संस्था छत्तीसगढ़ शबरी सेवा संस्थान के प्रदेश सचिव के पद पर लगातार 32 वर्षों से छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलो मे सामाजिक कार्य कर रहे है छत्तीसगढ़ शबरी सेवा संस्थान द्वारा वर्तमान में जिला कोरिया,जशपुर सुरजपुर और मुंगेली जिला मे वृद्धाश्रमों का संचालन और जिला सरगुजा, सुरजपुर मुगेली एंव एमसीबी जिला में नशा मुक्ति केंद्र का संचालन कर रही है। छत्तीसगढ़ शबरी सेवा संस्थान के प्रदेश सचिव सुरेन्द्र साहू को पुर्व में भी नेहरू युवा केन्द्र संगठन द्वारा जिला एवं राज्य युवा पुरस्कार,स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय युवा पुरस्कार,, एकता फाऊंडेशन नागपुर द्वारा कोविड योद्धा गौरव सम्मान,साथी फाऊंडेशन द्वारा कोरोना योद्धा सम्मान लगातार सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है सुरेन्द्र साहू को इंडिया डायमंड डिग्निटी अवार्ड 2024 मिलने पर लोगों ने बधाई दिया है।

सशस्त्र झंडा दिवस राज्य सैनिक बोर्ड के द्वारा राज्य भवन में मनाया

♦भारत टाइम्स♦

बालोद/परस साहू। अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद जिला बालोद सहस्त्र झंडा दिवस कार्यक्रम में शामिल राज भवन में मनाया गया सशस्त्र झंडा दिवस राज्य सैनिक बोर्ड के द्वारा राज्य भवन में मनाया गया सशस्त्र झंडा दिवस मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए महामहिम राज्यपाल रमेन डेका राज्य सैनिक बोर्ड के संचालक ब्रिगेडियर विवेक शर्मा साहब जी विशेष अतिथि के रूप में मेजर जनरल संजय शर्मा जी कार्यक्रम में शहीद परिवारों का सम्मान किया गया एवं वीरता पदक से सम्मानित सैनिकों का सम्मान किया गया राज्यपाल ने अपने उद्बोधन में सैनिक हित में राज्य शासन द्वारा अनेक लाभकारी योजनाएं चलाए जाने की बात कही हमेशा सैनिक हित में काम करने की बात कही गई और कार्यक्रम में विशेष रूप से शामिल हुए अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद के प्रदेश पदाधिकारी प्रदेश अध्यक्ष कर्नल डॉक्टर हरेंद्र त्रिपाठी महासचिव किशोरी लाल साहू जी लेखा अधिकारी प्रदेश सचिव योगेश साहू जी शिक्षक कोषाध्यक्ष संतोष साहू जी प्रदेश मीडिया प्रभारी देवेंद्र डड़सेना जी प्रदेश संयोजक रवि साहू जी प्रदेश संगठन मंत्री केपी साहू जी रायपुर जिला संरक्षक जगमोहन साहू जी बालोद जिला अध्यक्ष नंदकिशोर साहू सचिव कोमल साहू दुर्ग जिला उपाध्यक्ष सुदन लाल साहू एवं महासमुंद जिला अध्यक्ष युवराज चंद्राकर जी एवं धमतरी बालोद कांकेर दुर्ग रायपुर महासमुंद कोंडागांव जिलों के कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित थे

सोशल मीडिया के दुरुपयोग से बचे - युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण

आराध्य का द्वितीय बार प्रवास प्राप्त कर धन्य हुए भरूचवासी

- गुरुदेव ने दी सद् संगति करने की प्रेरणा
- 58 हजार किलोमिटर की पदयात्रा कर जन जन को अहिंसा का संदेश देने वाले युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी का आज भरूच जिला मुख्यालय में मंगल पदार्पण हुआ।

♦भारत टाइम्स♦

भरूच (गुजरात)। 58 हजार किलोमिटर की पदयात्रा कर जन जन को अहिंसा का संदेश देने वाले युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी का आज भरूच जिला मुख्यालय में मंगल पदार्पण हुआ। वर्तमान में सौराष्ट्र कि ओर गतिमान आचार्यश्री की इस यात्रा में कई ऐसे क्षेत्र भी है जहां सन 2023 में भी पदार्पण हुआ था। भरूच में भी पूर्व में गुरुदेव पधारे थे आज पुनः तेरापंथ के सरताज का द्वितीय आगमन प्राप्त कर नगर वासियों में अतिशय खुशी छाई हुई थी। प्रातः अंकलेश्वर से विहार कर आचार्यश्री गतिमान हुए। मार्ग में विशालकाय नर्मदा नदी पर पर निर्मित ' नर्मदा मैया ' ब्रिज को पावन बनाते हुए गुरुदेव ने भरूच जिला मुख्यालय में प्रवेश किया। सकल श्रावक समाज जय जयकारों से अपने आराध्य की अभिवंदना कर रहा था। लगभग 10 किमी विहार कर गुरुदेव का श्री के.एल जैन के निवास पर प्रवास हेतु पदार्पण हुआ। इस अवसर पर स्थानीय विधायक श्री अरुण सिंह राणा, विधायक श्री रमेश मिस्त्री, पूर्व विधायक श्री दुष्यंत पटेल भी स्वागत हेतु उपस्थित हुए एवं शांतिदूत का भरूच पदार्पण पर अभिनंदन किया। जैन श्वेताम्बर देरासर में मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में जन समुदाय को प्रतिबोधित करते हुए युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने कहा झ संगति का व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व होता है। हम कैसी संगति कर रहे है, उसी अनुरूप फिर व्यक्ति का आचरण भी हो सकता है। तीन प्रकार की संगति होती है, व्यक्ति की संगति, पुस्तक की संगति और आजकल सोशल मीडिया की संगति भी इस श्रेणी में आ जाती है। संगति अच्छी होती है तो व्यक्ति का आचार भी अच्छा हो सकता है। सोशल मीडिया के दुरुपयोग से बचकर उसका सकारात्मक पक्ष देखना चाहिए। पांच बातों का ध्यान रखना आवश्यक है कि बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो, बुरा मत सोचो और बुरा मत करो।

सनातन बोर्ड गठन हेतु एवं कपिल शर्मा के शो पर पाबंदी लगाने हेतु प्रधानमंत्री को संबोधित डीएम को सौंपा ज्ञापन

♦भारत टाइम्स♦

गंगापुर सिटी। (राजस्थान) डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी राष्ट्रीय विचार मंच के राष्ट्रीय महामंत्री प्रशासन हिंदू रत्न राहुल गोयल ने आज सनातन बोर्ड गठन हेतु एवं कपिल शर्मा के शो पर पाबंदी लगाने हेतु प्रधानमंत्री को संबोधित डीएम गौरव सैनी गंगापुर सिटी को ज्ञापन सौंपा । शुक्रवार को हिंदू रत्न श्री राहुल गोयल ने कहा कि देश में सनातन बोर्ड स्थापना की आवश्यकता है। इसके गठन को अलग-अलग प्रांतों से मांग उठ रही है इसलिए सरकार को चाहिए कि वह बोर्ड के गठन की मांग को पूरा करे। और कपिल शर्मा का शो पर भी पाबंदी लगाई जाए क्योंकि कपिल शर्मा के शो में जिस प्रकार भारत रत्न महाकाव्य के रचयिता रविंद्र नाथ टैगोर जी का मजाक बनाया जा रहा है बहुत ही निंदनीय है हम सरकार से मांग करते हैं कि इस प्रकार के जो भी शो दिखाए जाते हैं उसे पर तत्काल प्रभाव से पाबंदी लगाई जाए। हिंदू रत्न राहुल गोयल ने कहा कि सनातन बोर्ड के गठन से किसी को कोई नुकसान नहीं होगा। बल्कि सनातन गठन के गठन से समाज की एकता और सशक्तिकरण पहले से अधिक मजबूत होगा। उन्होंने कहा कि इसके गठन होने से धार्मिक प्रतिष्ठानों का सम्मान और संरक्षण मिलने के साथ-साथ सनातन सभ्यता और धरोहर की पुरजोर रक्षा होगी। बोर्ड के गठन होने से समाज में फैली भिन्न-भिन्न प्रकार की कुरीतियों को समाप्त किया जा सकेगा। साथ ही गुरुकुलों को शुरू किया जा सकेगा। जिससे सनातन संस्कृति के साथ-साथ देश भर में अज्ञानता रूपी अंधकार समाप्त होने से ज्ञान रूपी प्रकाश का हमारी भावी पीढ़ी में संचार होगा। उन्होंने कहा कि इससे देश की अखंडता और प्रभुता और मजबूत होगी। जिससे सनातन धर्म की संस्कृति का विकास और सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलने से देश मजबूत होगा।

मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने सशस्त्र सेना ध्वज दिवस पर अंशदान अर्पण किया

♦भारत टाइम्स♦

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 7 दिसावर सशस्त्र सेना ध्वज दिवस पर शनिवार को गांधीनगर में अंशदान अर्पण कर देश की सीमाओं तथा मातृभूमि की रक्षा करने वाले वीर जवानों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। उल्लेखनीय है कि देश की रक्षा के लिए समर्पित होकर अपने प्राणों का बलिदान देकर वीरगति को प्राप्त हुए सेना तथा सशस्त्र बलों के कर्तव्यनिष्ठ जवानों के परिवारों के कल्याण के लिए इस सशस्त्र सेना ध्वज दिवस पर सभी स्वैच्छिक अंशदान - दान अर्पण कर उनकी सेवाओं का ऋण स्वीकार करते हैं। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भी इस उद्देश्य से सशस्त्र सेना ध्वज दिवस पर अपना योगदान अर्पण किया। इस अवसर पर पुलिस महानिदेशक श्री विकास सहाय तथा सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास बोर्ड के लेफ्टिनेंट कर्नल (सेवानिवृत्त) श्री जेठवा व अधिकारी भी उपस्थित करहे।

भारतीय मंदिर | मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शिवालय पार्क का किया निरीक्षण

भारतीय मंदिरों और पुराणों की महिमा तथा कारीगरी को दर्शा रहा शिवालय पार्क

♦भारत टाइम्स♦

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को प्रयागराज नगर निगम द्वारा नैनी के अरैल में बनवाए जा रहे शिवालय पार्क का निरीक्षण किया। पार्क का जायजा लेते हुए मुख्यमंत्री ने निर्माण कार्यों को समय पर पूरा करने का निर्देश दिया। शिवालय पार्क महादेव को समर्पित एक भव्य स्थल है, जो भारतीय मंदिरों और पुराणों की महिमा तथा कारीगरी को दशार्ता है। 11 एकड़ के क्षेत्र में फैला यह पार्क विविधताओं से भरपूर है, जिसमें कला, प्रकृति और मनोरंजन का संगम देखने को मिलेगा। महाकुम्भ की शोभा को बढ़ाने हेतु निमार्णाधीन इस पार्क का निर्माण 14 करोड़ रुपए की लागत से किया गया है।

निर्माण कार्य में वेस्ट मटीरियल का किया जा रहा उपयोग- शिवालय पार्क को भारत के मानचित्र के आकार में डिजाइन किया गया है, जिसमें सभी प्रमुख मंदिर उनके मूल स्थानों पर ही बनाए गए हैं, ताकि आगन्तुक तीर्थ यात्रा का अनुभव कर सकें।

पार्क में तुलसी वन और संजीवनी वन भी बनाया गया है। बच्चों के लिए अलग जोन बनाया जा रहा है। इसके अलावा पार्क के अंदर फूड कोर्ट और रेस्त्रां भी बनाया जा रहा है । शिवालय थीम पार्क को तैयार कराने में सबसे खास बात है कि इसमें अधिकतर वेस्ट मटीरियल का प्रयोग किया जा रहा है। इसके निर्माण कार्य में जुटी कंपनी जेड टेक इंडिया लिमिटेड के पास ही तीन साल तक इसके रख रखाव की जिम्मेदारी रहेगी। इन मंदिरों का प्रतिरूप करवाया जा रहा है तैयार सोमनाथ मंदिर (गिर सोमनाथ, गुजरात)

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर (श्रीशैलम, आंध्र प्रदेश) महाकालेश्वर मंदिर (उज्जैन, मध्य प्रदेश) ओकारेश्वर मंदिर (खंडवा, मध्य प्रदेश) बैद्यनाथ मंदिर (देवघर, झारखंड) भीमाशंकर मंदिर (भीमाशंकर, महाराष्ट्र) रामनाथस्वामी मंदिर (रामेश्वरम, तमिलनाडु) नागेश्वर मंदिर (द्वारका, गुजरात) काशी विश्वनाथ मंदिर (वाराणसी, उत्तर प्रदेश) त्र्यंबकेश्वर मंदिर। नासिक, महाराष्ट्र केदारनाथ मंदिर (रुद्रप्रयाग, उत्तराखंड घृष्णेश्वर मंदिर (औरंगाबाद, महाराष्ट्र)। **महत्वपूर्ण शिव मंदिर-** बैजनाथ मंदिर - बैजनाथ, हिमाचल प्रदेश पशुपतिनाथ मंदिर - काठमांडू, नेपाल लिंगराज मंदिर - भुवनेश्वर, ओडिशा वीरभद्र मंदिर - लेपाक्षी, आंध्र प्रदेश शोर मंदिर - महाबलीपुरम, तमिलनाडु।

भाजपा की संगठनात्मक बैठक का हुआ आयोजन

- वनमंत्री केदार कश्यप व जिला प्रभारी मंत्री टंकराम वर्मा हुए शामिल
- भाजपा की डबल इंजन की सरकार से हर वर्ग को मिल रहा हैं लाभ - टंकराम वर्मा

♦भारत टाइम्स♦

नारायणपुर/छत्तीसगढ़। (गोलू मरकाम)। आज भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय नारायणपुर में संगठनात्मक विषयों को बैठक आहुत की गयी। इस महत्वपूर्ण बैठक में विभिन्न नेताओं और कार्यकताओं ने भाग लिया और आगामी चुनावों के लिए रणनीतियों पर चर्चा की।बैठक में कैबिनेट मंत्री व नारायणपुर जिला प्रभारी मंत्री टंकराम वर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा की भाजपा की डबल इंजन की सरकार से हर वर्ग को मिल रहा है लाभ कोई वर्ग अछूता नहीं है।आगे उन्होंने कहा, ₹विधानसभा और लोकसभा चुनाव में हमारी सफलता कड़ी मेहनत का परिणाम है। अब हमें आगे पंचायत और नगरीय निकाय चुनावों में भी मेहनत करनी है और शहरी तथा ग्रामीण सरकारों का गठन करना है। वर्मा ने कार्यकताओं को आगामी चुनावों के लिए पूरी तरह से तैयार रहने और अपनी रणनीतियों को सुदृढ़ बनाने की सलाह दी। आगे उन्होंने कार्यकताओं को आगामी चुनावों के लिए तैयार रहने और उसी उत्साह और मेहनत के साथ काम करने की अपील की। बैठक को वनमंत्री और नारायणपुर विधायक केदार कश्यप ने अपने संबोधन में कहा, ₹जिस तरह कार्यकताओं ने कड़ी मेहनत करके विधानसभा चुनाव में जीत दिलाई है और लोकसभा चुनाव में भी जीत दर्ज की है, इसके लिए देवतुल्य कार्यकताओं की मेहनत का मैं प्रशंसा करता हूं। आपके समर्पण और परिश्रम के परिणामस्वरूप ही हमें डबल इंजन की सरकार मिली है। आगे कश्यप ने सभी कार्यकताओं और नेताओं का धन्यवाद किया और उन्हें आगामी चुनावों के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा, ₹हम सबको मिलकर एक टीम के रूप में काम करना है और जनता का विश्वास जीतना है। हमें यह सुनिश्चित करना है कि भाजपा की नीतियों और कार्यक्रमों का लाभ प्रत्येक नागरिक तक पहुंचे। बैठक को भाजपा जिलाध्यक्ष रूपसाय सलाम ने भी अपने विचार साझा किए। सभी ने आगामी चुनावों में भाजपा की जीत सुनिश्चित करने के लिए एकजुट होकर काम करे आगे उन्होंने कहा कि पार्टी की नीतियों और विकास कार्यों को जनता तक पहुंचाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इस अवसर पर भाजपा नेता बृजमोहन देवांगन, गौतम गोलछा, संतनाथ उसेंडी, प्रताप मंडावी सहित भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

सबको जोड़ने की ताकत रखती है भारतीयता और सनातन: सीएम योगी

देश के नाम होना चाहिए हर काम: मुख्यमंत्री

स्वर्वेद महामंदिर धाम, वाराणसी में आयोजित विहंगम योग संत समाज की स्थापना के शताब्दी समारोह महोत्सव में शामिल हुए मुख्यमंत्री

पीएम मोदी ने भी की थी विहंगम योग संत समाज व ट्रस्ट के कार्यों की सराहना

सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 18 दिसंबर 2023 को इस समारोह का शुभारंभ किया था। शताब्दी महोत्सव के अवसर पर उन्होंने स्वर्वेद महामंदिर का भव्य उद्घाटन भी करते हुए विहंगम योग संत समाज व स्वर्वेद महामंदिर ट्रस्ट के कार्यों की सराहना की थी। 2021 में भी पीएम मोदी के सानिध्य में इस पूरे कार्यक्रम में हमें सहभागी बनने का अवसर प्राप्त हुआ था। इस दौरान आचार्य स्वतंत्र देव जी महाराज, स्वतंत्र प्रवर विज्ञान देव जी महाराज, कैबिनेट मंत्री अनिल राजभर आदि मौजूद रहे।

अच्छा नेतृत्व मिलता है तो परिणाम सुखद आते हैं

सीएम योगी ने कहा कि अच्छा नेतृत्व मिलता है तो सुखद परिणाम आते हैं। आज विरासत का सम्मान भी है तो विकास के माध्यम से लोककल्याण का बड़ा अभियान भी। योग की परंपरा को वैश्विक मंच पर ले जाने का श्रेय पीएम मोदी को जाता है। दुनिया के 175 से अधिक देशों के अंदर लोग योग के साथ जुड़े हैं। जब भी योग की चर्चा होगी, भारत के ऋषियों के प्रति श्रद्धा का भाव दुनिया के नागरिकों के मन में जुड़ेगा। पीएम मोदी ने 21 जून की तिथि को विश्व योग दिवस के रूप में कर दिया।प्रयागराज में 13 जनवरी से महाकुंभ प्रारंभ होने वाला है। पीएम मोदी ने इसे भी मान्यता के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता दिला दी। मोदी जी के मार्गदर्शन में 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में भगवान श्रीरामलला अपने दिव्य मंदिर में विराजमान हुए हैं।

♦भारत टाइम्स♦

वाराणसी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पीएम मोदी जी कहते हैं कि हर काम देश के नाम होना चाहिए। देश सुरक्षित है तो धर्म भी सुरक्षित है। धर्म सुरक्षित है तो हम भी सुरक्षित हैं, इसलिए जो भी कार्य हो, वह व्यक्ति, समाज, मत-मजहब के दायरे से ऊपर उठकर सनातन धर्म के मूल्यों के अनुरूप भारत की वैदिक-आध्यात्मिक परंपरा का अनुसरण करते हुए देश के नाम होना चाहिए। भारतीयता और सनातन सबको जोड़ने की ताकत रखता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को स्वर्वेद महामंदिर धाम में आयोजित विहंगम योग संत समाज की स्थापना के शताब्दी समारोह महोत्सव में शामिल हुए। 25000 कुंडीय स्वर्वेद ज्ञान महायज्ञ का भी आयोजन किया गया है। लाखों लोगों के होने के बावजूद यहां की सुचारू व्यवस्था की सीएम योगी ने तारीफ की।

1924 में सद्गुरु सदाफल देव महाराज ने की थी विहंगम योग संत समाज की स्थापना - मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 1888 में बलिया के छोटे से गांव में सद्गुरु सदाफल देव महाराज का अवतरण हुआ। उन्होंने 1924 में विहंगम योग संत समाज की स्थापना की। जब समाज शताब्दी समारोह कार्यक्रम के साथ जुड़ रहा है, तब हम भी इसके साक्षी बन रहे हैं। हम सभी को संत की यौगिक साधना का प्रसाद प्राप्त हो रहा है। विहंगम योग संत समाज स्वर्वेद महामंदिर ट्रस्ट के माध्यम से दिव्य-भव्य मंदिर बनाकर कोटि-कोटि श्रद्धालुजनों को अपने पुरुषार्थ के माध्यम से जोड़ने के साथ ही भारत की योग परंपरा व आध्यात्मिक धारा को जन-जन तक पहुंचाने को कृतसंकल्पित दिख रहा है।

हाथ पर हाथ रखकर बैठा नहीं रह सकता सच्चा योगी व संत- सीएम योगी ने कहा कि सद्गुरु सदाफल देव महाराज ने आध्यात्मिक अभियान को आगे बढ़ाया और यह भी बताया कि सच्चा योगी-संत देश व समाज की परिस्थितियों को देखकर हाथ पर हाथ रखकर बैठा नहीं रह सकता। देश जब गुलामी की बेड़ियों से जकड़ा था, तब सद्गुरु सदाफल देव जी महाराज ने अपनी आध्यात्मिक साधना के साथ विदेशी दासता से मुक्त कराने के लिए आजादी के आंदोलन में भाग लेकर बैरकपुर से देश के प्रथम स्वातंत्र्य समर के शंखनाद के साथ खुद को जोड़ा था। आप सब भी समृद्ध आध्यात्मिक परंपरा के साथ राष्ट्रधर्म के लिए समर्पित महत्वपूर्ण कड़ी से खुद को जोड़ रहे हैं।

सद्गुरु की परंपरा का आज भी हो रहा निर्वहन- सीएम योगी ने कहा कि सद्गुरु सदाफल देव जी महाराज ने उत्तराखंड ने स्वर्वेद रचा। उनकी अद्भुत परंपरा का निर्वहन आज भी हो रहा है। विज्ञान देव जी महाराज एक वर्ष से कन्याकुमारी से कश्मीर तक की यात्रा पर थे। आचार्य जी भी विदेश में भक्तों को जगाने के लिए आध्यात्मिक यात्रा पर निकले थे। यह संदेश देता है कि चुपचाप नहीं बैठना है, बल्कि एक कार्य पूरा हुआ तो अगले कार्य की शुरूआत करनी है और हर काम देश-सनातन धर्म के नाम है। आज हम जिस कार्यक्रम के साथ जुड़ रहे हैं, यह उसी विरासत का सम्मान है, जिसे 100 वर्ष पहले सद्गुरु सदाफल देव महराज ने प्रारंभ किया था। आचार्य स्वतंत्र देव जी महाराज, संत प्रवर विज्ञान देव महाराज उसी परंपरा का अनुसरण करते हुए उसे आगे बढ़ाते हुए जनजागरण के वृहद अभियान से जुड़ रहे हैं।

पहले की तुलना में 2014 के बाद से 100 गुना बेहतर हुई काशी की कनेक्टिविटी- सीएम योगी ने कहा कि पीएम मोदी ने अपने संसदीय क्षेत्र काशी को 10 वर्ष में चमका दिया है। अब काशी विश्वनाथ धाम, दुनिया का सबसे बड़ा स्नान घाट (नमो घाट) है। यहां हैलीपेड भी है। यहां बड़े-बड़े कार्यक्रम हो सकते हैं। काशी के घाट अब नए भव्य स्वरूप में देखने को मिलते हैं। देव मंदिरों का कायाकल्प हुआ है। पहले की स्थिति के मुकाबले 2014 के बाद से सड़क, रेल, वायुसेवा की कनेक्टिविटी 100 गुना बेहतर हुई है। अब काशी से हल्दिया के बीच में जलमार्ग का उपयोग कर यात्रा को बढ़ा सकते हैं। यह क्षेत्र भी अब तीर्थ के रूप में विकसित हो गया है। स्वास्थ्य हो या शिक्षा, विकास के विभिन्न पक्षों को लेकर काशी आज चमक रही है और काशी के साथ पूरा यूपी पीएम मोदी के मार्गदर्शन में आगे बढ़ रहा है। अब 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के दर्शन हो रहे हैं, जहां विकास भी है और विरासत का सम्मान भी।

चिराग परियोजना अर्न्तगत बिंजली और दुग्गाबेंगाल में एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का हुआ समापन

♦भारत टाइम्स♦

नारायणपुर/छत्तीसगढ़। (गोलू मरकाम)। चिराग परियोजना अर्न्तगत उद्यानिकी विभाग द्वारा न्यूट्रिशन सर्पोटिव एंड रेसिलियेंट हार्टिकल्चर के विषय पर सहायक संचालक उद्यान श्री तोषण कुमार चन्द्राकर के निदेर्शानुसार ग्रामीण उद्यान विस्तार अधिकारी के समन्वय से एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन 07 दिसम्बर को ग्राम बिंजली मे सम्पन्न हुआ। जिसमें 150 से अधिक कृषको एवं आजीविका समुह के सदस्यो को चिराग परियोजना के उद्देश्यो परियोजना अर्न्तगत उद्यानिकी विभाग से मिलने वाले योजनाओं बाड़ी विकास, ग्रेविटी ड्रीप एवं बाड़ी की सुरक्षा हेतु फैसिंग कराने हेतु जानकारी दी गई। साथ ही सब्जी एवं फलदार पौधो के रोपण की विधि की जानकारी अधिकारियों द्वारा दिया गया। विभाग द्वारा चिराग परियोजना अर्न्तगत सभी चालीस गाँव में इसी प्रकार के प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। जिसमे ग्राम के सभी कृषक उत्साहित होकर प्रशिक्षण प्राप्त कर उन्नत तरीके से सब्जी एवं फलदार पौधो की रोपण करने की विधि सीख रहे है।

छोटेडोंगर पहुंचे कांग्रेस के जांच दल को जिला प्रशासन ने रोका, हाई वोल्टेज ड्रामे के बाद प्रशासन ने दी अंदर जाने की अनुमति

♦भारत टाइम्स♦

नारायणपुर/छत्तीसगढ़। (गोलू मरकाम)। नारायणपुर से बड़ी खबर सामने आई है जहां छोटेडोंगर स्थित एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय में सीसीटीवी कैमरा और शौचालय में रहकर पढ़ाई करने का मामला सामने आने के बाद प्रदेश कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल की जाँच दल गठित की गई है। यह जांच दल छोटेडोंगर स्थित एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय पहुंची हुई थी जहां पहले तो स्कूल के अंदर दाखिल होने से पुलिस द्वारा रोका गया। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम समेत विधायकों ने जब गेट के सामने बैठकर जिला प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की तब कही जाकर 2 घंटे बाद प्रवेश दिया गया।

जांच दल में ये नेता शामिल- कांग्रेस के इस जांच दल में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम के साथ ही बालोद विधायक संगीता सिन्हा, सिहावा अम्बिका मरकाम, नारायणपुर जिला पंचायत अध्यक्ष श्यामबत्ती नेताम, जिला पंचायत सदस्य गंगा सोरी, कांग्रेसी नेत्री पूजा बैठारू शामिल हैं।

ब्रज के कलाकारों ने हस्तिनापुर में किया नौटंकी- चन्दनबाला का सफल मन्चन

♦भारत टाइम्स♦

मथुरा। ब्रज में भले ही नौटंकी विलुप्तीकरण की कगार पर खड़ी हुई है किन्तु इसे संजीवनी प्रदान करने के लिए ब्रज संस्कृति केन्द्र मथुरा (रजि.) संस्था के माध्यम से ब्रज के कलाकार लगातार प्रयास कर रहे हैं। अभी हाल ही में हस्तिनापुर स्थित तीर्थधाम चिदायतन में श्री शान्तिनाथ अकम्पन कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट व श्री शांतिनाथ जिनालय तथा जैन मुमुक्षु समाज हस्तिनापुर के तत्वावधान में पाँच दिनों से चल रहे श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा-महोत्सव के समापन अवसर पर मोक्ष कल्याणक के अंतर्गत भारत के विभिन्न राज्यों के अलावा नैरोबी, कनाड़ा, नेपाल, लंदन व अमेरिका से पधारे जैन मुनियों व श्रद्धालुओं में सानिध्य में 6 दिसम्बर 2024 को सङ्गीत नाटक अकादमी पुरस्कार से नवाजे जा चुके ब्रज संस्कृति विशेषज्ञ संगीताचार्य डॉ. खेमचन्द शास्त्री के निर्देशन में उनकी लिखी नौटंकी- जैन साध्वी चन्दन बाला का ब्रज के कलाकारों द्वारा भव्य मन्चन किया गया। जैन साध्वी चन्दन बाला जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की प्रथम आर्यिका थीं, इससे पहले वह वैशाली के राजा चेटक की राजकुमारी थी। राजकुमारी से जैन साध्वी बनने तक की उनकी करुणामयी संघर्ष गाथा को ब्रज के कलाकारों ने मंच पर आधुनिक तरीके से साकार कर खूब वाह वाही लूटी। अंत में महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य अभिनंदन जैन ने दल नायक डॉ. खेमचन्द यदुवंशी शास्त्री को जिनवाणी व स्मृतिचिन्ह प्रदान करते हुए सम्मानित किया और मुक्त कंठ से सभी कलाकारों की भूरि भूरि प्रशंसा की तथा स्पष्ट किया कि साध्वी चन्दन बाला के पावन जीवन चरित्र से हमें यह सीखना होगा कि संकट के समय हमें घबराना नहीं चाहिये अपितु पूर्ण श्रद्धा के साथ अपने इष्टदेव की आराधना करनी चाहिए। संचालन महोत्सव के सौधर्म इंद्र बने स्वप्निल जैन ने किया। चन्दन बाला की भूमिका अदा करती हुई कलाकार- हेमा ब्रजवासी।

नगर पालिका क्षेत्र वासियों को करोड़ रुपए का मिला सौगात

निर्माण कार्यों के लिए वन एवं राजस्व मंत्री ने किया भूमिपूजन

♦भारत टाइम्स♦

नारायणपुर/छत्तीसगढ़। (गोलू मरकाम)। राज्य सरकार के वन एवं जलवायु परिवर्तन, जल संसाधन, कौशल विकास, सहकारिता और संसदीय कार्य मंत्री श्री केदार कश्यप और प्रदेश के खेलकूद एवं युवा कल्याण, राजस्व, आपदा प्रबंधन एवं जिले के प्रभारी मंत्री श्री टंकराम वर्मा के द्वारा नगर पालिका क्षेत्र में एक करोड़ 15 लाख रुपए के निर्माण कार्यों का भूमि पूजन किया गया। उन्होंने नगरपालिका क्षेत्रांतर्गत अटल परिसर निर्माण कार्य हेतु 30 लाख रुपए, वार्ड क्रमांक 01 नयापारा मुक्तिधाम में शेड एवं अहाता निर्माण कार्य हेतु 23 लाख 84 हजार रुपए, सब्जी मार्केट के समीप शॉपिंग काम्पलेक्स निर्माण कार्य हेतु 14 लाख 29 हजार रुपए, वार्ड क्रमांक 13 कुम्हारपारा मुक्तिधाम में शेड निर्माण कार्य हेतु 6 लाख 88 हजार रुपए, वार्ड क्रमांक 01 नयापारा सखी सेंटर के समीप सुनीता यादव घर से मेनरोड तक सी.सी. रोड निर्माण कार्य हेतु 15 लाख 86 हजार रुपए और वार्ड क्रमांक 01 नयापारा स्थित बस स्टैंड में ए.सी.पी कार्य हेतु 25 लाख रुपए से निर्माण हेतु भूमिपूजन किया गया।

इस अवसर पर वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि नगर पालिका क्षेत्र के निवासियों को उनके मकान के लिए स्वामित्व योजना के तहत पट्टा प्रदाय किया जाएगा। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य निमार्ता श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस 25 दिसंबर को जन्मदिवस के अवसर पर अटल चौकों पर कार्यक्रम आयोजित किए जाने की जानकारी दी गई। उन्होंने नगर पालिका क्षेत्रांतग्रत निर्माण कार्यों के लिए भूमिपूजन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित नगर वासियों को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य को विकसित और उन्नत बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं लागू की गई है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के गारंटी और मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के सुशासन में प्रदेश वासियों के लिए जन कल्याणकारी विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही है जिससे लोगों के जीवन में सुख और समृद्धि लाएगी।

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष ने कुंभ मेला-2025 की तैयारियों का निरीक्षण किया

♦भारत टाइम्स♦

संजय यादव। वाराणसी। शनिवार को अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड सतीश कुमार ने महाप्रबंधक,पूर्वोत्तर रेलवे सौम्या माथुर के साथ प्रयागराज महाकुम्भ-2025 में आनेवाले श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु झूँसी-प्रयागराज रामबाग के मध्य गंगा नदी पर निमार्णाधीन महत्वपूर्ण पुल का ट्राली निरीक्षण तथा प्रयागराज रामबाग व झूँसी स्टेशनों पर मेला यात्रियों की सुविधा हेतु विकास कार्यों का 26 अक्टूबर, 2024 को निरीक्षण किया। इस अवसर पर ई डी /रेलवे बोर्ड संजीव कुमार,मुख्य प्रशासनिक अधिकारी निर्माण अभय कुमार गुप्ता,मंडल रेल प्रबंधक /वाराणसी विनीत कुमार श्रीवास्तव, प्रबंध निदेशक (फश्ठछ) प्रदीप गौढ़ समेत मुख्यालय एवं मण्डल के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी,रेलवे बोर्ड ने प्रयागराज संगम में लगने वाले आगामी महाकुम्भ मेला-2025 में आनेवाले श्रद्धालुओं की सुगमता एवं समुचित यात्री सुविधा प्रदान करने हेतु झूँसी एवं प्रयागराज रामबाग स्टेशनों का गहन निरीक्षण किया तथा कुम्भ मेले की तैयारियों के परिप्रेक्ष्य में स्टेशनों पर चल रहे यात्री सुविधा विस्तार कार्यों की समीक्षा की और कार्य प्रगति पर संतोष व्यक्त किया । उन्होंने शेष विकास कार्यों को गुणवत्ता के साथ उचित मानकों के आधार पर तय समयसीमा में सम्पन्न करने का निर्देश दिया।

उन्होंने प्रयागराज रामबाग एवं झूँसी समेत मेला क्षेत्र में पड़ने वाले सभी स्टेशनों और उनके रेलपथ की संरक्षा,गति एवं परिचालनिक व्यवस्थाओं तथा यात्रियों की सुरक्षा, संरक्षा एवं सुविधाओं का आंकलन किया। इसी क्रम में अध्यक्ष रेलवे बोर्ड ने प्रयागराज रामबाग स्टेशन का भी गहन निरीक्षण किया और कुम्भ मेला के दौरान मेला यात्रियों की सुविधा के लिए नवनिर्मित यात्री आरक्षण केन्द्र,अनारक्षित टिकट काउंटर, अस्थाई फूड एवं वाटर वेंडिंग स्टॉलों, प्रतीक्षालयों,अतिरिक्त प्रवेश और निकास मार्ग,स्थाई एवं अस्थाई प्लेटफार्मों, यात्री शेड, आर सी सी बेंचेस, फुट ओवर ब्रिज, अस्थाई प्रतीक्षालयों, सी सी टी वी सर्विलांस, बाउंड्री वाल एवं भीड़ के समुचित प्रबंधन हेतु नियंत्रण कक्ष तथा यात्री सुविधा विकास कार्यों का गहन निरीक्षण किया और सभी कार्यों के समय से सम्पन्न होने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

निरीक्षण के क्रम में चेयरमैन रेलवे बोर्ड ने झूँसी-प्रयागराज रामबाग के मध्य गंगा नदी पर दोहरीकरण के अंतर्गत बन रहे महत्वपूर्ण रेल ब्रिज सं 111 पर मोटर ट्राली से निरीक्षण कर वरिष्ठ अधिकारियों एवं रेल विकास निगम लिमिटेड के इंजीनियरों के साथ कार्य की समीक्षा की। इस महत्वपूर्ण पुल में 76.2 मीटर स्पान के 24 गर्डर हैं तथा इसकी लंबाई लगभग 2 किमी है।ब्रिज निर्माण का कार्य पूर्ण हो गया है।दोनों सिरों पर डक्ट के माध्यम से गर्डर लॉन्चिंग का काम पूरा हो गया। झूँसी-प्रयागराज रेल खंड में शतप्रतिशत फार्मेशन वर्क पूरा हो गया। इस क्रम में उन्होंने झूँसी स्टेशन पर नव निर्मित सेकण्ड एन्ट्री के सकुर्लेटिंग एरिया में निर्मित यात्री प्रतीक्षालय,बाउन्ड्री वाल,हाई मास्ट लाइट, अस्थाई शौचालय, रात्रि के आने -जाने के लिये अप्रोच सड़क का गहनता से निरीक्षण किया । इसके पश्चात उन्होंने स्टेशन भवन, फुटओवर ब्रिज, प्लेटफॉर्म पर किये जाने वाले निर्माण कार्य सहित सभी कार्यों की पूर्णता को परखा। इसके अतिरिक्त उन्होंने कुम्भ मेला के दौरान यात्रियों को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं सहित इनकी वैकल्पिक व्यवस्थाओं तथा इनको स्थापित किये जाने वाले चिन्हित स्थलों की जानकारी प्राप्त की।

ज्ञातव्य हो की बनारस से झूँसी तक कुल 113.59 किमी का दोहरीकरण विद्युतीकृत लाइनों के साथ पूरा किया जा चुका है शेष प्रयागराज रामबाग से झूंसी में (7.36 किमी) पूर्ण होने के उपरांत 11 दिसम्बर,2024 को महत्वपूर्ण ब्रिज के साथ सी आर एस निरीक्षण के बाद ओपनिंग किया जाना है जिसके उपरान्त यह पूरा रेल खण्ड दोहरीकृत हो जायेगा । जिससे इस रेल खण्ड पर लाइन क्षमता बढ़ेगी जिससे अधिक यात्री गाड़ियों का तेज गति से परिचालन सम्भव होगा और यात्रा समय में कमी आएगी। प्रयागराज रामबाग-वाराणसी रेल खंड का दोहरीकरण एवं विद्युतीकरण का लाभः- प्रतिवर्ष प्रयागराज संगम पर लगने वाले माघ मेला तथा अर्ध कुम्भ व महाकुम्भ स्नान पर्व में बहुत बड़ी संख्या में तीर्थयात्री आते हैं।

हम होंगे कामयाब पखवाड़ा के तहत 09 दिसंबर को

♦भारत टाइम्स♦

देवास/जगदीश परमार। साइबर सुरक्षा एवं डिजिटल साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम होंगे आयोजित जिले में 10 दिसम्बर तक संचालित होगा 'हम होंगे कामयाब' अभियान देवास जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग श्रीमती रेलम बघेल ने बताया कि जेंडर आधारित हिंसा को रोकने के लिए जिले में 10 दिसम्बर तक ह्यह्लहम होंगे कामयाबह्व अभियान संचालित किया जा रहा है।

इस दौरान विभिन्न गतिविधियां एवं कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग श्रीमती रेलम बघेल ने बताया कि ह्लहम होंगे कामयाबह्व पखवाड़ा अंतर्गत दिनांक 09 दिसंबर को साइबर सुरक्षा एवं डिजिटल साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिसमें ऑनलाइन प्रशिक्षण का आयोजन किया जाएगा। दिनांक 10 दिसंबर को अभियान का समापन होगा।